प्रेम पत्र



प्यारे दोस्त श्री यशवन्तराव चव्हाण जी,

सादर प्रणाम।

यों तो मैं हर बहादुर मराठे की इज्जत करता हूँ लेकिन आपकी इज्जत सबसे ज्यादा इसलिए करता हूँ क्योंकि आप उन मराठों में से हैं जिन्होंने भारतवर्ष में इतने बड़े-बड़े काम किये कि उनकी इज्जत बढ़ती चली गई। भारत में शायद ही कोई मिनिस्ट्री ऐसी होगी जिसे आपने न संभाला हो। श्रीमती इन्दिरा गांधी की हुकूमत के दिनों में आपने भी बहुत हुकूमत की।

लेकिन जिस दिन से सरकार जनता पार्टी के हाथ में आई उस दिन से आपने पैंतरा बदलना शुरू किया। यह भी ठीक है कि आजादी के बाद आप भी जगजीवन राम की तरह सदा मिनिस्टर रहे। यहाँ तक कि इन्दिरा गांधी की हार के बाद भी आपकी मिनिस्ट्री न गई क्योंकि आप विपक्ष के नेता चुने गये।

लेकिन आज की आपकी हालत देखकर मुझे बहुत रहम आता है। न तो आपके पास मोटर-गाड़ी है, न आपके पास सोना-मोती है। ले देकर केवल नाम मराठों का रह गया है। आपकी आज की हालत देखकर पूज्य शिवाजी की याद आती है जिन्होंने लाखों नारियों के जीवन बचाये और उनकी इज्जत की रक्षा की। आप उनके शिष्य होकर भी एक अबला नारी का न मान रख सके, न उसे हरा सके। मुझे इस बात का भी बहुत दुख है कि आपके सारे चमचे धीरे-धीरे इन्दिरा गांधी की प्लेट में जा पहुंचे और आप देखते रह गये।

आपकी सेवा में एक सुझाव देना चाहता हूँ। मैंने सुना है कि आप गाय-बछड़े को छोड़ना नहीं चाहते, तो बेशक उसे अपने यहाँ बंधा रहने दीजिये लेकिन अपने हाथ को जगन्नाथ समझिये और देश का भला करने के लिये इन्दिरा जी से हाथ मिला लीजिये।

आपका

चिल्ली

मुखपृष्ठ पर

ट्रांजिस्टर से निकल रहीं रेखायें स्पष्ट
चिल्ली इनको पकड़ने में आ जायेगा फर्स्ट
आ जायेगा फर्स्ट अक्ल है इसकी मोटी
कसकर पगड़ी बांध अक्ल हो जाये छोटी।



दीवाना

अंक : २०, ८ जून से १४ जून १९७८ तक
वर्ष : १४

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

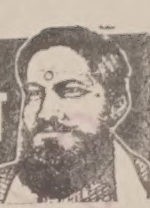
चन्दें
छमाहीः २५ रु०
वार्षिकः ४८ रु०
द्विवार्षिकः ९५ रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिए पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें। —सं०

काका के कारतूस

प्रश्न दीवाना के दीवानों के, उत्तर काका हाथरसी के



सलीम अहमद खाँ, डोंगरगाँव

प्र० : मेरी प्रेमिका अपने घर ले जाकर मेरा स्वागत करना चाहती है ?

उ० : इस स्वागत में राज है, बचते रहो सलीम,
कोई बीमारी लगे, ढूंढ़त फिरो हकीम।

मदनलाल होतवानी, रायपुर

प्र० : आप यदि घने जंगल में फँस जायें तो किसकी मदद से बचेंगे ?

उ० : काकी हर पल रहें, काका कवि के साथ,
जो हम पर हमला करे, क्या उसकी औकात।

वीरशंकर पमनानी, मधुबनी

प्र० : छम-छम करती वह आई, मैं खड़ा सिंदूर लेकर, उसने राखी आगे बढ़ाई ?

उ० : राखी ही बँधवाय लो, इसमें ही है खैर,
वरना करनी पड़ेगी, अस्पताल की सैर।

सुरेश शर्मा 'निशांत', गढ़ा, जबलपुर

प्र० : इंसान की मर्यादा कब भंग हो जाती है ?
दौलत की दारू पिए और अहं की भंग,
तब मर्यादा छोड़ती, उस प्राणी का संग।

सोहनलाल अग्रवाल, नाहर कटिया (असम

प्र० : वकील काला और डाक्टर सफेद [illegible] यों पहनते हैं ?



उ० : झूठ बोलकर कोर्ट में, पाप कमायें वकील।
लेकिन डाक्टर का हृदय होता मोती झील ॥

नरेन्द्रकुमार गोकलानी, ब्यावर

प्र० : प्रेमिका प्रेमी का हाथ छोड़ने पर कब मजबूर हो जाती है ?

उ० : पहली से कट जाय, फिर दूजी से सट जाय,
ठोकर मारे प्रेमिका, पीछे को हट जाय।

राजा ठाकुर, भोपाल

प्र० : कोई हसीना खयालों में आए तो ?

उ० : इस जुनून का खुद-ब-खुद कर लीजे उपचार,
कान पकड़कर गाल पर, थप्पड़ मारो चार।

रशी दुज्जमा कुसुंडा, (धनबाद)

प्र० : अपने दिल में छिपे प्यार व दर्द की भावनाओं को प्रकट करें काका ?

उ० : मालिक के घर देर है, मगर नहीं अंधेर,
माशूका के नाम की, नित-प्रति माला फेर।

रतनकुमार अग्रवाल, देवरिया

प्र० : कोई प्रेमी किसी प्रेमिका से प्रेम करे; उस प्रेमिक[a की] शादी किसी दूसरे से हो रही हो तो ?

उ० : भाग्य-भोग के फेर में, ऐसा अवसर आय,
उस प्रेमी को चाहिए, सन्यासी बन जाय।

राजू पंचाल, हाथीभाटा, अजमेर

प्र० : आप चुनाव में खड़े हों तो चुनाव चिन्ह क्या होगा ?

उ० : लहराए दल के झंडे पर लंबी दाढ़ी,
यह ही चुनाव का चिन्ह, यही होगा 'मोटो'।
हर गली, मुहल्ला, चौराहे औ' सड़कों पर
दाढ़ी वाले काका कवि का होगा फोटो।

तेहसींग मुहम्मद खां, जयपुर

प्र० : मैं इस वर्ष पास होऊँगा या......?

उ० : अगर अक्ल से काम लो, हो जाओगे पास।
नहीं सफल हो नकल से, मिटे पास की आस ॥

[illegible]री रंजू, लुधियाना

प्र० : जब कोई बूढ़ा आदमी मरता है तो रंजो-ग़म क्यों करते ?

उ० : मौज मजे का अड़ंगा, बूढ़ा बाप विचित्र।
अब उससे पीछा छुटा, खुलकर खेलो मित्र ॥

अखिल कुमार सक्सेना, कानपुर

प्र० : क्या चिल्ली साहब के दो दांत छोड़कर [illegible] सब चू[illegible] गये हैं ?

उ० : चिल्ली छोटी उम्र के भोलानाथ नितांत।
सिर्फ उगे हैं अभी तक, आगे के दो दांत ॥

सतीश शर्मा, अबोहर (पंजाब)

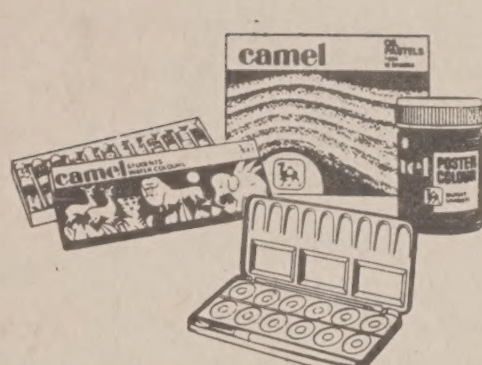
प्र० : आपको काकी की चाकी में पिसते हुए कितने वर्ष हो [illegible]

उ० : वर्ष पचास बसंत पर, पूरे हों इस बार।
स्वर्ण जयन्ती मनेगी, हो जाओ तैयार ॥

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

अखिल भारतीय
कैमल
रंग-प्रतियोगितामें
भाग लीजिए।



री चित्र प्रतियोगिताओं में २००० लों के १४ लाख विद्यार्थियों ने लिया है. इसीसे उत्साहित होकर हम आयोजित कर रहे हैं सबसे प्रतियोगिता.

न बनाने में आपकी अनूठी प्रतिमा कैम्लिन कद्र करती है. भारत में प कहीं भी रहते हो, किसी भी स्कूल पढ़ते हों कैम्लिन आपके पास घड़ियों, अलार्म घड़ियों जैसे अनेक र पुरस्कारों के साथ पहुंचेगी. हमारी प्रतियोगिता में भाग लीजिए.

सर्वोत्तम चित्र बनाइए. संभव है हमारे ७०० पुरस्कारों के विजेताओं में आप भी हों.

चित्र बनाने के लिए हम आपके ६ प्रिय विषय सुझाते हैं. खेल-कूद, त्योहार, पंछी, तितलियां, फूल और पशु! इस प्रतियोगिता में पुरस्कार जीतने के लिए आप में से कोई भी बहुत छोटा या बड़ा नहीं है, कक्षा के अनुसार हमने पहले ही तीन समूह बना दिये हैं.

क) पूर्व प्राथमिक से कक्षा ४
ख) कक्षा ५ से कक्षा ८
ग) कक्षा ९ से कक्षा ११

प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए कोई शुल्क नहीं है. आपको अपने बनाये चित्र के साथ बस एक एंट्री कूपन भेजना होगा. यह कूपन प्रतियोगिता के नियमो के साथ स्टूडेंट्स एंड आर्टिस्ट्स वाटर कलर केक्स, स्टूडेंट्स वाटर कलर ट्यूब्स, पोस्टर कलर ट्रायल पेक्स और ऑयल पेस्टलस के साथ मिलते हैं.

कैम्लिन प्राईवेट लिमिटेड
आर्ट मटीरियल डिव्हीजन
अंधेरी, बम्बई-४०० ०५९



ाज ही अपने लिए कैमल कलर ारीदिए.

तियोगिता अवधिः
ून-सितम्बर, १९७८.

VISION 784 HIN

आजकल फैल रही

बिमारियों का

दीवाना रूप

आप भी गौर से पढ़िये शायद कोई बीमारी हो ।

मिलेरिया



यह महामारी व्यापक रूप से फैलती है इसमें प्रभावित रोगी नेता से हाथ मिलाने की कोशिश करता है ।

एस्ट्रौरिया



जिनको इस बिमारी का दौरा पड़ता है वह जमीन खोद-खोद कर इतिहासिक चीजें या काल पात्र निकालतें रहते हैं ।

एपैंडी साईटिस



देश में लाखों करोड़ों लोग एपेंडी-साईटिस से पीड़ित हैं । इसमें रोगी को किसी साईं बाबा की भक्ति का बुखार चढ़ा रहता है ।

इनफिरेन्जा



यह बिमारी मंत्रियों को होती है । जब इसका प्रकोप होता है तो मंत्री कोई न कोई बहाना बना कर घूमने-फिरने विदेश खिसक जाता है ।

डंडारफ



सरकार के खिलाफ प्रदर्शनों के समय प्रदर्शनकारियों व पुलिस को अचानक इस रोग का दौरा पड़ता है । वे रफ हो जाते हैं और एक-दूसरे पर डंडे बरसाते हैं ।

हायजा



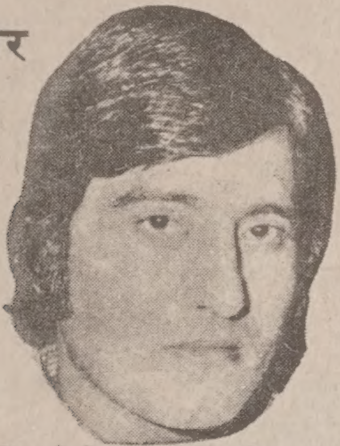
इसमें रोगी इकट्ठे होकर किसी के विरुद्ध हाय-हाय के नारे लगाने लगते हैं।

कालाजारु



कालाजारु पीड़ित व्यक्ति काले रुपये की कमाई में दिन-रात लगा रहता है। ब्लैक मार्केट में खूब नावां बटोरता है।

बाबासीर



इस रोग में रोगी आम व्यक्ति होते हुए भी बाबाओं जैसे कपड़े पहनता है, गले में कंठी पहनता है।

फ्लेग



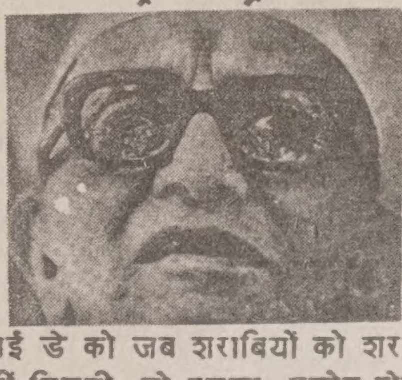
जिसको यह रोग हो जाता है वह नेताओं को ब्लैक फ्लैग यानि काली झंडी दिखाता है।

लाकवा



यह रोग फैक्ट्री मजदूरों को होता है। इससे फैक्ट्रियों में मजदूर काम नहीं करते, फलस्वरूप कारखाने में लॉक आऊट हो जाता है।

ड्राइसैन्ट्री



ड्राई डे को जब शराबियों को शराब नहीं मिलती तो इसका प्रकोप होता है। रोग के प्रभाव में रोगी अनाप-शनाप मोरारजी देसाई के खिलाफ बोलता है।

चना कुरमुरा

एक बार अकबर, उनका पुत्र तथा बीरबल प्रातःकाल पैदल ही महलों के पास सैर के लिए गए। प्रातः कालीन, मंद सुगन्धित हवा में चलने से उन लोगों का चित्त अत्यधिक प्रफुल्लित था, इसलिए टहलते हुए कुछ दूर निकल गये।

वापस लौटते समय सूर्य की धूप जब कुछ तपने लगी तो बादशाह ने अपना लबादा बीरबल के कंधों पर रख दिया। शाहजादे ने भी अपने पिता की देखा-देखी अपना लबादा उतार कर बीरबल को दे दिया। बीरबल ने वह भी अपने कंधे पर रख लिया।

यह देख कर बादशाह बीरबल से मजाक करने लगे, 'बीरबल, अब तो तुम्हारे ऊपर एक गधे का बोझ हो गया होगा ?'

बीरबल ने तत्काल उत्तर दिया, जहांपनाह, एक का ही नहीं बल्कि दो गधों का बोझ है।'

●

बादशाह तथा बीरबल वायु सेवन के लिए बाहरी तरफ गांव की ओर जा रहे थे। रास्ते में बादशाह की नजर बट के पेड़ पर पड़ी जो अत्यन्त घना और छायादार था। उसको देख बादशाह बोले, 'बीरबल, देखो कैसा अच्छा वर है।'

बीरबल ने जल्दी जवाब दिया, 'बेटी दे दो।'

बादशाह यह वाक्य सुनकर मुस्करा कर रह गये।

कुछ देर और चलने पर शहर में पहुँचे तो बीरबल एक मकान को देखकर बादशाह से कहने लगे, 'देखिए हुजूर यह कितना अच्छा है मगर सफाई के बिना कितना बुरा मालूम हो रहा है।'

तत्काल ही बादशाह ने उत्तर दिया, 'पोती दिला दो।'

●

एक दिन बादशाह ने कहा, 'बीरबल, जिस नाम के साथ वान लगा रहता है वह आदमी बड़ा बदमाश होता है, जैसे शुतरवान, फीतवान गाड़ीवान, आदि।'

बीरबल ने कहा, 'हाँ मेहरवान ! सच है।'

●

एक दिन अकबर बादशाह ने बीरबल से पूछा, 'सच और झूठ में कितना अन्तर है ?'

बीरबल ने उत्तर दिया, 'जहाँपनाह, आख और कान में जितना अन्तर है, उतना ही सच और झूठ में अन्तर है।'

बादशाह ने पूछा, 'बीरबल, सो कैसे ?'

बीरबल ने बताया, 'आलीजाह, सीधी-सी बात है, आंखों देखी बात सही और कानों सुनी बात झूठी।'

●

रजिस्टर्ड डाक्टर बने

आर. एम. पी./फार्मासिस्ट रजिस्ट्रेश (ऐलोपैथी) अनुभव आधार, आयुर्वेदिक (सरकारी मान्य परीक्षाएँ पत्राचार अध्ययन, मैडिकल रजिस्ट्रेश हेतु परामर्श लें।

इण्डियन कैरियर इंस्टीट्यूट

कृष्णा नगर, (बस स्टाप)
दिल्ली-५१

नियोजक

कृपया ध्यान दें

पूर्ववर्ती वित्तीय वर्ष के दौरान आपके द्वारा संदत्त वेतन तथ उसमें से काटे गये टैक्स के सम्बन्ध में वार्षिक विवरण दाखिल करने की अन्तिम तारीख इस वर्ष बढ़ाकर अ 30 जून, 1978 कर दी गयी है।

केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड की दिनांक 31 मार्च, 1978 क अधिसूचना के अनुसार **फार्म संख्या** 24, जिसमें यह वार्षि विवरणी भरनी होती है, बदल दिया गया है।

नियत समय पर वार्षिक विवरणी दाखिल न करने प जुर्माना लगता है जो प्रतिदिन की चूक के लिए 10 रुप तक हो सकता है।

याद रखें कि आपको 30 जून, 197 तक पुनरीक्षित फार्म संख्या 24 में पूरी-पूरी तथा सही-सही वार्षिक विवरणी दाखिल करनी है।

फार्मों या किसी अन्य प्रकार की सूचना/ सहायता के लिए कृपया अपने निर्धारण-कर्त्ता आयकर अधिकारी या जनसम्पर्क अधिकारी से सम्पर्क करें।

निरीक्षण निदेशक
(गवेषणा, सांख्यिकी और प्रकाश
आयकर विभाग
नई दिल्ली
द्वारा जारी किया गय

डीएवीपी 78/81

फिल्मी कलाकारों को दीवाना की ओर से

बर्थडे गिफ्ट

हमारी योजना फिल्मी सितारों को ये प्रेजेन्ट देने की है।

अमिताभ को



ताड़ के पेड़ का बीज

जीनत को



पूरी बाहों की शर्ट कॉनॅंट गर्ल छाप लम्बी स्कर्ट जिनसे पूरा बदन ढक जाये।

रणधीर कपूर को



चाकलेट का खाली डिब्बा (भरा हुआ देकर उसे और मोटा थोड़े ही बनाना है।)

परवीन बाबी को



कबीर के दोहों की किताब।

अशोक कुमार को



१९५० मॉडल की एक खटारा गाड़ी।

राजेश खन्ना को



डिम्पल स्कॉच की बोतल में देसी ठर्रा भर कर।

शत्रुघ्न को



हाइजिया निपल (मुँह बंद रखने के लिए)

संजीव को



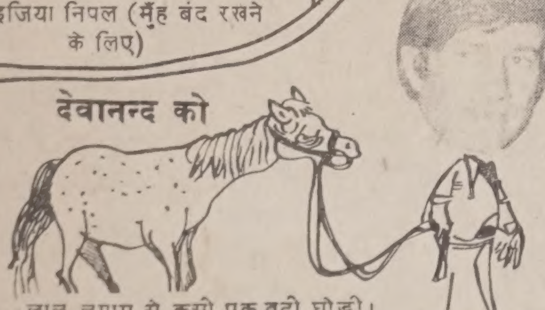
मिट्टी के घड़े में हेमा मालिनी के पैरों तले की मिट्टी हरिद्वार जाकर बहाने के लिये।

हेमा को

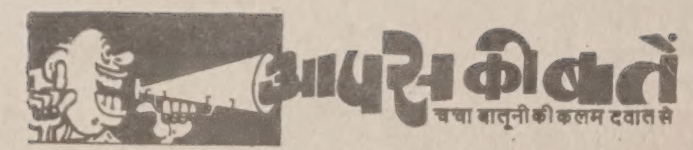


एक खाट–जाट के सिर पर रखने के लिये।

देवानन्द को



लाल लगाम से कसी एक बूढ़ी घोड़ी।



अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड

केवल प्रकाश, काशीपुर : ईश्वर की अदालत में हुए फैसले के विरुद्ध कहां अपील की जा सकती है ?

उ० : यदि आप गृहमन्त्री चरणसिंह बन जाएं तो अपील की क्या जरूरत है। उनके हिसाब से कोई अदालत कुछ नहीं। आपने फर्माया, 'इन्दिरा गांधी को पकड़ लो,' तो पकड़ लिया गया। पर अगले रोज अदालत ने छोड़ दिया, तो आप फर्माते हैं, 'अदालत ने छोड़ दिया ? अदालत कौन होती है छोड़ने वाली ?'

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

सुरेश शर्मा, मुंगेर : मैं दीवाना के लिए पूरे पेज का कार्टून भेजूं तो क्या आप प्रकाशित करेंगे ?

उ० : कार्टून देखने से पहले ही क्या आप हमसे कसम लेना चाहते हैं।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

विपिन कुमार अवस्थी, कलकत्ता : चाचाजी क्या दुनिया में पैसे से सब कुछ हो सकता है ?

उ० : एक चीज है, जो पैसे से नहीं हो सकती। वह है 'नफरत'।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

प्रताप सोमवंशी, मथुरा : क्या आप गधों की दुनिया का प्रेजीडेंट बनना पसन्द करेंगे ?

उ० : कमाल कर दिया आपने भी। आज पहली बार ... यह सोचना पड़ रहा है कि अब हम किस दुनिया के प्रेजीडेंट हैं।



नरेन्द्र कुमार गाबा, हांसी : जरा यह शेर सुनिये—

कौन किसका रकीब होता है,
कौन किसका हबीब होता है।
हाह, अच्छा बुरा जमाने में,
सिर्फ अपना नसीब होता है।

उ० : वो भी आलम अजीब होता है,
जिससे भागो, करीब होता है।
जिसे मिल जाए आपसी चाची,
वो बड़ा बदनसीब होता है।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

हरीश कुमार खुराना, मेरठ : आप से एक शिकायत है। अंक १६ में सवाल यह है पृष्ठ पर जो आदमी कपड़े लेने घर घर जाता है, पहले उसके मूछें हैं बाद में मूछें नहीं। क्या आप इस ओर ध्यान देंगे ?

उ० : अवश्य देंगे। इस गलती के लिए हमें खेद है।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

चन्द्र किरण प्रसाद, आमदा (बिहार) : आप की शक्ल हमारे उन चाचा जी से मिलती है जो पांच साल पहले घर से भाग गये थे। कहीं आप वही तो नहीं।

उ० : हमारी ऐसी किस्मत कहां कि घर से भाग सकें। घर हमसे दूर भागता है और पहली तारीख के अलावा कभी हमें राजी खुशी अपने अन्दर नहीं आने देता।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

अब्दुल सत्तार कलर, बीकानेर : क्या भगवान फिर कभी अवतार लेगा ?

उ० : अवश्य लेगा आपने सुना नहीं कि बच्चे भगवान का रूप होते हैं। और हमारी जनता सरकार का ध्यान इस ओर नहीं है कि अगर धरती पर जगह कम हो गई तो ... लोग पेड़ों पर खाटें बिछा कर वहां ... करेंगे ?

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

अनिल कुमार गुलाटी, रिवाड़ी : ... अगर हमारी हथेली पर बाल होते ...?

उ० : हम अपने सर की ओर देखते और दहाड़े मार-मार कर रोने लगते।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

मोहरी लाल राजकुमार, डीमापुर : मनुष्य मरते समय भगवान का नाम क्यों लेता है ?

उ० : कभी मरे नहीं तो इस प्रश्न का उत्तर क्या दें ? हमें तो इतना भी पता नहीं जनता पार्टी के नेता आज जयप्रकाश नारायण का नाम क्यों ले रहे हैं ?

हरदीप गुलाटी, नई दिल्ली : दीवाना इन्तजार क्यों करवाने लगा है ?

उ० : इस प्रयास में कि आपके लिए अधिक से अधिक मनोरंजन का साधन बन सके। इस मनोरंजन के साथ ही अब आपको दीवाना के लिये अधिक इन्तजार नहीं करना पड़ेगा।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

अन्जू—पटियाला : मैं और मेरी सहेलियां बड़ी उलझन में हैं। सभी पत्रिकाओं के लिए लोग स्त्रीलिंग के हिसाब से उनका नाम लेते हैं। जैसे नई सुषमा आ गई, सारिका, फिल्मी दुनिया या माधुरी आ गई। दीवाना का नाम हम कैसे लें ? "दीवाना आ गई" कहें या "दीवाना आ गया" ?

उ० : जैसा नाम है उसके अनुसार ही सोचिये और कोई खास कानून न लगाइये। यह बात केवल दीवाना के साथ ही नहीं और भी पत्रिकाओं के साथ है। जैसे हम कहेंगे, "धर्मयुग आ गया", "सा० हिन्दुस्तान आ गया" धर्मयुग आ गई या साप्ताहिक हिन्दुस्तान आ गई कोई नहीं कहता।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

सुरेश कुमार शर्मा, मुंगेर : क्या आपने कभी पाप किया है ?

उ० : जी हां। एक बार पुण्य करने की कसम खाई थी और वह निभा न सके।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

प्रहलाद जसवानी, कृष्णा कन्हैया, मंडला : जीवन का लक्ष्य क्या होना चाहिये ?

उ० : 'जीयो, और जीने दो।' जिसे आज की परिस्थितियों में फंसे मनुष्य ने बना दिया है, 'न जियो, न जीने दो।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

एस० जब्बार हुसैन बैरागी, बीकानेर : चाचा जी, अगर हम चिराग लेकर ढूंढे तो, क्या आप जैसा दूसरा मिल सकता है ?

उ० : कोई सूझ-बूझ वाला तो मुश्किल से ही मिलेगा। आजकल पुरानी कांग्रेस वाले अपना अधिवेशन करते हैं तो वहां स्वर्ण सिंह और युवराज करणसिंह के अलावा पिंडाल में बस लाऊडस्पीकर लगाने वाला ही होता है।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

बन्द करो बकवास



कभी खुद पे कभी हालात पे रोना आया…
बन्द करो बकवास, बावर्ची को छुट्टी भी तुम्हीं ने दी है। याद रखो!
है अपना दिल तो आवारा, न जाने किस पर आयेगा।
बन्द करो बकवास बाबू, एक घण्टे से खरबूजा चुन रहे हो और अभी तक चुन नहीं पाये।
आज हमें एक जान का दुश्मन जान से प्यारा लगता है।
बन्द करो बकवास, शराब पीनी थी तो समिति में क्यों शामिल हुए?

वर की खोज

'अर्जुन अरविंद

कुमारी कुसुम कली ने अभी कुल बत्तीस वसंत देखे थे। पिता की सम्पन्नता की घनी छाया में बी० ए० किया, एम० ए० में प्रवेश लिया कि पिता दुनिया से रूठकर चले गए। कुमारी कुसुम कली के जीवन में वसंत आ गया। लेकिन जल्दी ही भावुकता और साहस के गिरीष जीवन की टहनियों पर खिल गये और वह उसी वर्ष बी० एड० का प्रशिक्षण लेकर एक स्थानीय कन्या विद्यालय में अध्यापिका हो गई।

कुसुम कली के जीवन में स्थिरता आयी तो झील की तरह ठहर गई। बत्तीस पार करने पर भी उसने वैवाहिक आवश्यकता को अनुभव नहीं किया। यौवन का फल पक कर जब पिलपिलाने की अवस्था में आने को हुआ तब कुसुम कली ने इस अनछुए अनुभव को प्राप्त करने का इरादा किया। कुसुम कली में एक विशेषता यह है कि जिस काम को एक बार हाथ में ले लिया उस पर तन्मयता से जुट जाती और पूरा करके ही दम लेती थी। और कुसुम कली अब इस नये काम को हाथ में ले चुकी थी। किंतु उसके सामने समस्या थी कि इस काम को सम्पन्न करने के लिए पहल किससे करवाये? किसी के आगे हाथ फैलाना उसने सीखा नहीं था। इसलिए स्वावलम्बन की नीति अपनाकर उसने स्वयं ही वर खोजने का बीड़ा उठाया।

कुसुम कली की आर्थिक दशा इतनी गई बीती नहीं थी कि किसी प्रकार की कमी उसकी राह में रोड़े अटका सके। फिर भी वह ढूंढ़ने कहाँ जाये? एक दिन अपने मस्तिष्क के पृष्ठ पर इस समस्या का निदान भी आखिर उसने खोज ही लिया। सुबह नाश्ते की टेबल पर वह एक परिवारिक पत्रिका के अंतिम पृष्ठ पलट रही थी कि वैवाहिक विज्ञापन के कॉलम पर उसकी दृष्टि पड़ी। सतर्कता से एक-एक विज्ञापन पढ़ना आरम्भ किया। कई-कई रंग, आकार तथा व्यावसाहिक धरातल पर खड़े वर-वधुओं के विज्ञापन थे। कुसुम कली नहीं चाहती थी कि स्वयं किसी को पत्र लिखकर याचना करे। इसीलिए उसी दिन की डाक से अपने लिए एक वैवाहिक विज्ञापन उसने मासिक पत्रिका के कार्यालय को प्रकाशनार्थ भेज दिया—

'पच्चीस वर्षीया, स्नातक, गौरवर्णीय, सुन्दर कन्या के लिए योग्य वर चाहिए। पूर्ण विवरण तथा फोटो सहित लिखें—

कुसुम कली की आयु बत्तीस, लेकिन रेकार्ड तोड़ मुटापे तथा भीमकाय आकार के कारण लगती चालीस से कम नहीं थी। रंग इतना गोरा कि सेब भी शरमा जाये। नाक नक्श भी सुन्दर-सुगढ़। लेकिन उसने अपनी आयु को सात वर्ष माइनस कर लिखना ही उचित समझा। अपनी एक मात्र अनपढ़ नौकरानी गंगा से पत्र डलवाकर वह निश्चिन्त हो गयी।

कुछ दिन बाद ही कुसुम कली की डाक का वजन उसके शरीर की तरह भारी होना आरम्भ हो गया। रोज आठ-दस लिफाफे विज्ञापन के उत्तर में आने लगे। वह उन्हें एक सुन्दर सी फाइल में सहेज कर रखने लगी।

रविवार की सुबह। कुसुम कली ने अपने कमरे को चंदन अगरबत्ती की खुश्बू से महकाया। लॉन से सुन्दर फुल चुनकर गुलदस्ता बनाया और अपनी टेबल पर सजाया। अपने थुल-थुल शरीर को कुर्सी पर धंसाया, कुर्सी मजबूत लकड़ी की थी फिर भी चरमरा गई। मन में उठती अनेक हिलोरों को समेट कर पत्रों वाली फाइल निकाली। कुल एक सौ ग्यारह पत्र उसकी फाइल में जमा हो चुके थे। लगभग उतने ही फोटो भी। वह एक-एक पत्र को ध्यान से पढ़ने लगी और उनके साथ आये फोटो का बारी बारी से निरीक्षण करती रही। पत्र इतने विचित्र थे कि उससे आधे भी नहीं पढ़े जा सके और उसके दिमाग की नसें झनझना उठीं। किसी फोटो से कार्टून की आकृति झलकती तो किसी में फिल्मी नौसिखियेपन की बू आती थी। उनमें से किसी एक पत्र और फोटो का चुनाव करना उसे बड़ा कठिन लग रहा था। इसलिए सब पर हल्की सी दृष्टि डालकर उसने चार उम्मीदवारों के फोटो व पत्र अलग किये। शेष को वापस फाइल में दबाकर एक ओर डाल दिया। चारों में से किसी एक का चुनाव करना भी उसके लिए समस्या थी। किसी की एक विशेषता अच्छी लगी तो किसी दूसरे का अन्य गुण वह नकार न पा रही थी। इसलिए उसने चारों ही उम्मीदवारों का विस्तृत इंटरव्यू लेने का फैसला किया। चारों को एक समय और दिन दे दिया। जिससे स्वयं का भी समय खराब न हो और अधिक दिनों तक दिमाग पर बोझ भी न बना रहे।

उसे इंटरव्यू लेना था। इंटरव्यू का अनुभव उसे नहीं था। लेकिन अपनी नौकरी के लिए एक अदद इंटरव्यू उसने अवश्य दिया था। इसलिए अपने घर का वातावरण इंटरव्यू नुमा बनाया। बरामदे में स्टूल डाल कर नौकरानी को बैठाया और फर्नीचर आदि को सलीके से जमाया।

पहला उम्मीदवार कमरे में प्रविष्ट हुआ तो कुसुम कली के लिपस्टिक पुते अधरों पर मुस्कान फिसल गई। नाम था—शैलेन्द्र कुमार। कद चार फुट तीन इंच, इकहरा शरीर और आयु कुल पच्चीस वर्ष। शैलेन्द्र कुमार ने शरीर को आधा झुकाकर सादर अभिवादन किया और सामने रखे कौच पर बैठ गया। कुसुम कली पहला प्रश्न सोच ही रही थी कि स्वयं शैलेन्द्र कुमार ने ही प्रश्नोत्तर आरम्भ करने का भार अपने ऊपर ले लिया—'बात यह है माताजी, आपकी सपुत्री है न वो···!'

कुसुम कली चौंकी—'कैसी मूर्खता की बात करते हो? मेरी और पुत्री?'

'जी हां, जी हां, वो कुसुम कली जी शायद आप ही की पुत्री हैं न? उन्हीं का पत्र मेरे पास गया था···।'

'...........'

'तो कुसुम कली जी आपकी पुत्री नहीं हैं?'

'आपको गलत फहमी हुई है जी। मैं ही कुसुम कली हूं।'

'आ ऽ ऽ ऽ प?' शैलेन्द्र की आवाज तो लड़खड़ा ही गई थी। कुसुम कली के शारीरिक आकार को देखकर हाथ पैर भी कीर्तन करने लगे थे।

कुसुम कली ने एक दो प्रश्न करने का प्रयत्न किया। लेकिन उसकी आवाज जैसे ठिठुरकर जम गयी थी। कुसुम कली झुंझला उठी और बाहर बैठी नौकरानी को

रूप कुमार स्नेही अब सामने विराजे हुए थे। उनका रूप भी वर्णन करने योग्य था। चेचक के दागों से भरा काला भुसण्ड चेहरा। पान से पीले हुए कुछ-कुछ बाहर निकले दांत। जब भी सांस लेते मुंह से निकला पायरिया का भभका कमरे में फैल जाता। कुसुम कली ने प्रश्न किया—'आप क्या करते हैं?'

'शुद्ध साहित्य सेवा। अर्थात लेखन तो चलता ही है, मैं आजकल सौन्दर्य बोध की एक मासिक पत्रिका 'रूप' निकाल रहा हूं।' रूप कुमार स्नेही मुख से शब्द कम निकाल रहे थे गंध अधिक। और उनकी खरगोश नुमा आंखें कुसुम कली के चेहरे पर ऐसी टिकी थीं जैसे दीवार पर छिपकली। पायरिया के भभकों के कारण कुसुम कली का सांस लेना दूभर हो रहा था। कभी वायें गर्दन घुमानी पड़ती कभी दायें। वह उस दम घोटू वातावरण से मुक्ति पाने का उपाय सोच रही थी और रूप कुमार स्नेही रोमांटिक मूड में आते जा रहे थे। आप जैसी स्वतंत्र विचारों की प्रगतिशील नारियों की ही देश को जरूरत है। आपसे मिलकर इतनी प्रसन्नता हुई है कि मैं धन्य हो गया। अरे! आप तो कुछ बोलती ही नहीं! देखिए, इतना शरमाना भी कैसा···?' स्नेही जी कितना क्या कहते गये, कुसुम कली को पता ही न चला। वह घुटन से मुक्ति पाने के सिवा और कुछ सोच ही नहीं पा रही थी। स्नेही जी की जबान रुकने का नाम नहीं ले रही थी। 'यदि आप जैसी जीवन संगिनी मुझे मिल जाये तो अपने एक उपन्यास पर शीघ्र ही फिल्म बना सकता हूं। ऐसी धांसू फिल्म की मेरी सभी कल्पनाएं उसमें फिट हो जायें और फिल्म पर्दे पर आते ही हिट हो जाये। उस फिल्म में नायक का रोल भी मैं स्वयं ही करना चाहता हूं और आप नायिका का रोल अदा कर लें तो स्टार ग्रुप के नखरों पर एक करारा थप्पड़ मार सकता हूं।' और स्नेही जी ने टेबिल पर ऐसा घूंसा मारा कि फूलों का गुलदस्ता कुसुम कली ने न पकड़ लिया होता तो फर्श पर उलट जाता। चेहरे पर गुबरेल मुस्कान बिखेरते हुए स्नेही जी कहने लगे—'आप मेरी ओर से पूरी स्वीकृति समझिये। मैं समझता हूं आपको तो किसी तरह की अड़चन नहीं होगी?'

'देखिए, आप आवश्यकता से अधिक बात कर रहे हैं!'

गुबरेल मुस्कान को फटेबांस सी हंसी में बदलते हुए स्नेही जी खिलखिला पड़े—'क्या खूब नाराजगी का रोल अदा कर लेती हैं आप! रूठने का यह स्टाइल उस बनने वाली फिल्म के लिए ऐसा फिट होगा कि दर्शक एक दूसरे को कोहनी मारने लगेंगे।'

कुसुम कली का चेहरा क्रोध में तमतमाकर सुर्ख तवे सा हो गया था। स्नेही जी इस तरह लट्टू हुए जा रहे थे कि एक-एक क्षण को कीमती समझकर उठने का नाम ही



नहीं ले रहे थे।

कुसुम कली को झुंझलाकर कहना ही पड़ा—'देखिए श्रीमान्, मुझे अन्य का भी इंटरव्यू लेना है।'

'अब अन्य की आवश्यकता ही क्या रह गई है? फिर भी चाहती हैं तो मुझे कोई आपत्ती नहीं। आपकी जो संगत मिली उस की स्मृति कई दिनों तक मेरे मस्तिष्क पर छाई रहेगी।' वाक्य पूरा कर खड़े होते हुए अपना खुरदरा हाथ कुसुम कली की ओर बढ़ा दिया। कुसुम कली झटके से पीछे खिसक गयी और भारतीय संस्कृति के अनुसार हाथ जोड़कर अभिवादन करने की भी अवहेलना कर एक शब्द बन्दूक की तरह दाग दिया—'धन्यवाद।'

स्नेही जी कमरे से बाहर हो गये तब कुसुम कली को खुलकर सांस लेने का अवसर मिला। उसका सांस धौंकनी की तरह चलने लगा। सोफे पर बिछी तोंद इस तरह हिलने लगी थी, जैसे बड़ी भारी गठरी ऊपरी नीचे गिर रही हो।

तीसरा उम्मीदवार कुसुम कली के सामने प्रकट हुआ वह भी असमंजस में डालने वाला था।

'आपका नाम?'

'मुझे वीरेन्द्र कुमार कहते हैं।' तीन सौ नम्बर के जर्दे की भीनी खुशबू का टुकड़ा अपने वाक्य के साथ बिखेरते हुए उसने उत्तर दिया।

वह अगरबत्ती पहलवान रूपी काया अब उसके सामने बैठ चुकी थी। दरवाजे से प्रवेश करते समय कुसुम कली ने देखा था, उसकी लम्बाई छह फुट से अधिक ही लगती थी। लेकिन वजन का अनुपात कुसुम कली से एक चौथाई भी न था। और आवाज इतनी पतली, जैसे गले में एक चिड़िया बैठा दी गई हो। किंतु वीरेन्द्र कुमार कीमती सूट और टाई में इस तरह सजे हुए थे जैसे किसी कंपनी के विज्ञापन एजेंट हों। वह किसी पब्लिक स्कूल के प्रिंसिपल थे। बात करने का तरीका एकदम सभ्य। लेकिन रसिक इतने कि रूप कुमार स्नेही से दस कदम आगे। यदि कुसुम कली तनिक भी सतर्क न रहती तो उसके गेंद नुमा शरीर से बल्ले की तरह सट जाते।

तीन उम्मीदवारों के साक्षात्कार से ही कुसुम कली इतनी बोझिल हो गयी थी कि चौथे को बुलाने का साहस नहीं जुटा पा रही थी। लेकिन कुछ क्षण सुस्ता लेने के बाद उसके मस्तिष्क की शिराओं ने फिर करवट ली और बाहर ऊंघ रही नौकरानी गंगा से चौथे उम्मीदवार को भी बुला ही लिया।

आगंतुक का अभिवादन स्वीकार कर कुसुम कली ने प्रश्न किया—'क्षमा कीजिए, मैंने आपके पुत्र को ही बुलाया था। किन्तु आप···?'

'हं ऽ ऽ ऽ ह, मेरा पुत्र तो अभी बारह वर्ष का ही है, वह भला आकर क्या करता?' आगंतुक पहले हंसे फिर हंसी को मुस्कराहट में बदलकर उत्तर दिया।

कुसुम कली के लिए यह सबसे अधिक आश्चर्य जनक पहेली थी। आंगतुक का हुलिया देखकर पहले तो कुसुम कली सहम गई। उससे भी लगभग सवाए आकार की तोंद। लम्बाई कुसुम कली से मात्र चार इंच अधिक। खिजाब से रंगे बाल और जीरो वाट बल्ब नुमा आंखें, पर्वतीय आकार की काया पर झूलता हुआ गहरा नीला सूट।

शेष पृष्ठ ४० पर



देखो गर्मी कितनी हो गई है। पसीना-पसीना आ रिया है।
गर्मी मा मेरी नन्ही जान निकल गयी
अहा इस वखत शिमला मां कितनी ठंड होगी। ठंडी-ठंडी हवा चल रही होगी।
क्यों शिमला की याद दिलाये जा रिया है। शिमला का नाम सुनते ही गर्मी और जादा महसूस हो रही है।
जभी तो कह रिया हूं शिमला क्यों नहीं चले चलते ?
चूहे, तुझे तो पता ही है कि हमारी आर्थिक दशा ठीक नहीं है। हमने अपना सारा पैसा और फर्नीचर-वर्नीचर बेच कर मोबाइल जासूसी कम्पनी बनाने के चक्कर में गाड़ी खरीदने में सारा पैसा लगा दिया। बड़ी मुश्किल से दोबारा मकान किराये पर लिया और काम चलाऊ सैकिंड हैंड फर्नीचर खरीदा। शिमला जाने के लिए अंटी में पैसा होना चाहिए।
पैसा होता तो हम दो टन का एयर कंडीशनर ही न खरीद लेते ?
हम गर्मी में सूख रहे हैं, उधर अमीर लोग एयर कंडीशंड कमरों में आराम से बैठे हैं। हालात हमको दोबारा अमीरों के खिलाफ जंग छेड़ने के लिये मजबूर कर रहे हैं... सम्पूर्ण क्रांति।
दुनिया मां पैसा इतनी जरूरी चीज नहीं है ? पैसा हाथ का मैल है और यह कभी नहीं सोचना चाहिये कि पैसे के बिना दुनिया का कोई काम नहीं हो सकता। इन्सान में सिर्फ विलपावर होनी चाहिये।
बेटा, विल पावर तो हममें भी बहुत काफी है। लेकिन ऐसी गर्मी मां विल पावर भी काम नहीं आती। विलपावर का आइसक्रीम नहीं बनाया जा सकता. विल पावर को फ्रिज करके शर्बत में नहीं डाला जा सकता।
भाई जी, यह विलपावर सर्दियों में ही ठीक रहता है। गर्म-गर्म चाय के साथ विल पावर का बड़ा मेल है। लेकिन यह चूहा क्या कह रिया है ? कहीं गर्मी के मारे इसके दिमाग के नट-बोल्ट लूज तो नहीं हो गये हैं।


है तो सब कुछ आंख, कान, नाक, मुँह, दो हाथ, दो पैर, एक पेट, एक गर्दन, ३२ इंच चौड़ी छाती, पांच-पांच अंगुलियां हाथ और पैरों में। सब कुछ वही है।
भाई लोगों मैं फालतू बकवास नहीं कर रहा हूँ। मुझे बताओ कि राजकपूर एराऊंड दि वर्ल्ड इन ऐट डालर्स गया था तो थम लोग पांच रुपये में शिमले भी नहीं जा सकते? हिन्दुस्तान मां कितने हिप्पी अमरीका से आते हैं, यहा आने के बाद वह बगैर पैसों के सारे भारत में घूमते रहते हैं। उनके सामने पैसों की समस्या नहीं आई तो हमारे सामने क्यों आये? हम उनसे किस मायने में कम है? उनके पास क्या है जो म्हारे पास नहीं है?
उसके इलावा थारे पास तो मूछें भी हैं। थम दोनों के दिमाग में जितना गुस्सा भरया है उससे तो एक डेरी फार्म की सारी भैंसों को दावत कराई जा सकती है। थम समझे कि नहीं मेरी बात।
स चूहे ने म्हारे दिमाग के पावर हाऊस का उद्घाटन करके बीस मेगावाट वाला सुपर बल्ब जगा दिया।
यह कुछ ठीक कह रिया है भाई जी। कभी-कभी इसका दिमाग काम कर जाता है। बगैर पैसों के शिमला जाना इतना कठिन नहीं है।
हमारे पास जासूसी सामान में भेस बदलने का सारा सामान है। उसकी मदद से हम मजे से मुफ्त में शिमला पहुंच सकते हैं। ठहरने के लिये वहां धर्मशालाओं की कमी नहीं है।
रहा खाने का सवाल, वह भी किसी न किसी तरह हल हो ही जायेगा।
विल पावर होनी चाहिये बस।
भी हिप्पी बन कर शिमला पहुंचेगा। ट्रक और कार वालों हम लिफ्ट मांगेगा। अमरीकन हिप्पियों को लिफ्ट मिल जाती है तो हम देसी हिप्पियों को क्यों नहीं मिल सकती?
सबसे जरूरी चीज यह गिटार नहीं भूलना भई।
यस, राईट हो फिल, वी सैल पिच लापक अवर वे टू शिमला। वी आर फ्लावर चिल्डरन ऑफ गाजियाबाद।
कम ऑन एवरी बॉडी ऐ लाल कपड़ों वाली मेमसाहब लेट अस गो टू शिमला दि ग्रूवी पलेस।
दो जासूस, करें महसूस यह दुनिया बड़ी खराब है।



हू ज ऊ ज ऊSSSSSS याSSS बैम फैलम डैंस फॉर कुग फूSSS डैंस फॉर कुग फूSSSS है ऐSSSS ऐ ऐ डैंस फॉर कुग फूSSSS।
गुडनेस ग्रेशस मी श्रो डोक्टर माई हर्ट इज बीटिंग डुम पुडी डुम पुडी डुम पुडी डुम पुडी टू टुम टूSS !
दम मारो दम। बोलो सुबह शाम. हरे कृष्णा हरे राम। दम मारो दम।
थम बस श्रंगूठा शिमला की तरफ करके इशारा करते रहना। कोई न कोई ट्रक वाला, कार वाला जरूर लिफ्ट दे देगा।
वह देख एक फियेट कार श्रा रही है। श्रकेला श्रादमी बैठया चला रिया है उसको इशारा कर।
यह तो रुक गया याड़ी. हमारी किस्मत बड़ी तेज है. पहली ही गाड़ी श्राई श्रौर वह रुक गयी हमारे लिए। बेचारे ने कार रोकने के लिए कितने जोर से ब्रेक लगाये ?
खिड़की से बाहर सिर निकाल कर हमें देख रिया भाई जी बात करो थम यह पूछ रिया है।
वट डू यू वांट ? वेयर डू यू वांट टू गो ?
हम भी शिमला जा रहा है।
यू वांट मी टू गिव यू ए लिफ्ट टू शिमला ?
मेन, यू हैव ए ग्रूवी कार। वी वांट टु गो टू शिमला मेन। वी शैल पेंट दैट टाऊन हैड। श्राप किधर जाना मांगटा हैंडसम मेन ?
शिमला ? वट लक मेन ! किस्मत हो तो ऐसा श्रौर भाई हो तो शत्रुघ्न सिन्हा जैसा। मेन, टुम्हारी कार बगैर सवारी के बांझ श्रौरत जैसा लगता। हम इसकी गोद भर दें ? लम्बा सफर है. तुम्हारा भी श्रकेले जी नहीं लगेगा। खूब गुजरेगी जब मिल बैठेंगे दीवाने चार।


रैहाना

Regd No. D (D)-275

परोपकारी






कम ऑन मेन, डु नॉट जस्ट स्टैन्ड देयर ! होप इन ।
लेट अस ऑल गो टु शिमला । एक से भले दो और दो से भले चार ।
देखो याड़ी, धोती फाड़ कर रुमाल हो गया ।
बीच सड़क पर कमाल हो गया ।
हमको शिमला तक कार में लिफ्ट मिल गई ।
हम तीनों कि सेहत बन गई
बेवकूफ हैं वह लोग जो पैसा खर्च कर शिमला जाते हैं
जब मुफ्त में शिमला पहुंचा जा सकता है ।
यह आइडिया तो मेरा ही था ।
जल्दी-जल्दी चढाओ सामान ।
भारी-भारी सामान लगेज कम्पार्टमैंट में रखो ।
हल्का-हल्का सामान ही अपने पास रखो ।
यह गिटार तो साथ ही रखना पड़ेगा, लम्बा है ।
अच्छा भाई हम तो चले, तू समझ रहा था कि ये बेवकूफ हैं, इनको लिफ्ट कहा मिलेगी ; इब आंखे फाड कर देख ले म्हारा कमाल । हम शिमला की ठंडी ठंडी हवा खायेंगे ; तू दीवाना पढ़ता और पसीना पोंछता रह जायेगा ।
भाई साहब आपकी कार में रेडियो है ।
है, रेडुआ है ;
तो इस सफर का मजा दूना हो गया समझो, लगा दो म्यूजिक
ओ. के. !
नहीं, नहीं, पहले दिल्ली से समाचार लगाओ । जरा सुनें कि हमारे आने के बाद से वहा क्या हो रहा है ?
शिमला २६२ कि. मी.
यह आकाशवाणी दिल्ली है ... अब आप पुलिस से प्राप्त सूचना सुनिये । आज सुबह अलीपुर पागलखाने से एक बहुत खतरनाक पागल भाग निकला है ... वह कम्पाऊंड से मेडीकल सुप्रिन्टेन्डेन्ट की फियेट कार ले भागा । कार का नम्बर डी० एल० आई० २०५३९ है । जिसको भी यह कार नजर आये वह पुलिस को सूचित करे । एक बार फिर ध्यान से सुनियें यह कार नजर आये तो सड़क से फौरन हट जायें । पागल बहुत खतरनाक है । दो वर्ष से उसका इलाज चल रहा था । पागल का हुलिया नोट कीजिये । बाल उलझे हुये, दाढी और मूंछ थोड़ी बढ़ी हुई हैं । रंग जरा-जरा सांवला है, उसके ऊपरी दांतों में एक दांत में सोना चढ़ा हुआ है इस पागल के अजीब पागलपन का दौर है वह
जब पूरी तरह पागलपन के दौरे में होता है तो जो भी सामने मिलता है उसे पकड कर उसका पेट फाड डालता है और अतड़िया निकाल कर पेड़ की टहनियों पर टांग देता है । एक बार इसे फिर सुनिये ।
हा हा हा हा ह ह ह हा ।
आगे की कहानी अगले अंक में ।

आपके पत्र

दीवाना का अंक १४ मिला । चिल्ली को हरे कपड़े पहने देख कर तो मैंने उसे भी तोता समझ लिया और खूब हंसा जब वास्तविकता मालूम हुई । फिल्मी पैरोडी वो भी विश्वनाथ की बहुत रोचक लगी । धारावाहिक उपन्यास अच्छा तो लगा परन्तु इतनी रोचक कहानी पढ़ते-पढ़ते जब पेज पलटने लगा तो देखा कि क्रमशः लिखा हुआ है. बहुत अफसोस हुआ । मोटू-पतलू व खुदा की जन्नत' बहुत रोचक लगे ।

सोनू 'कुन्दरा'—सिरसा

दीवाना अंक १४ प्राप्त हुआ चिल्ली लीला २१६ प्रशंसनीय थी और दीवाना के स्थाई स्तम्भ पिलपिल-सिलबिल, मोटू पतलू दीवाना पंचतंत्र, सवाल यह है आदि रोचक व सराहनीय रहे । दीवाना कैमल रंग प्रतियोगिता को प्रत्येक अंक में दिया करें। दीवानी चिपकियों को चिपकाकर खूब मजे लिए। अन्त में मैं यह दावे के साथ कह सकता हूं कि आज दीवाना जितनी रोचक पत्रिका है उतनी और कोई नहीं अतः मेरी आपसे प्रार्थना है कि दीवाना के साथ अद्वितिय अवश्य लिखा करें ।

अशोक लाल उर्फ भोली—हरिनगर

दीवाना का नया अंक मिला । इस अंक में मोटू-पतलू, चिल्ली, परोपकारी सभी कुछ अच्छा लगा । किन्तु आपने रंग भरो प्रतियोगिता बन्द करके दीवाना के साथ बहुत अत्याचार किया है । पहले दीवाना में रंग भरो प्रतियोगिता नियमित दी जाती थी । किन्तु अब आपने उसकी जगह गुमनाम है कोई प्रतियोगिता प्रारम्भ कर दी है जिसका पुरस्कार तीस रु० केवल एक व्यक्ती को मिलता है । यदि आप रंग भरो प्रतियोगिता देते हैं तो उसका पुरस्कार तीन व्यक्तियोंको मिलता है । अतः आप रंग भरो प्रतियोगिता फिर से प्रारम्भ कर दीजिए । आशा है आप इस विषय पर अवश्य विचार करेंगे और हम पाठकों को अगले अंक में 'रंग भरो प्रतियोगिता' अवश्य मिलेगी ।

विनोद कुमार भाटिया—मेरठ

अपनी फेवरिट पत्रिका 'दीवाना' का २० अप्रैल ७८ का अंक प्राप्त हुआ, चिल्ली को सिगरेट पीते व छल्ले उड़ाते देखा तो मैंने भी ऐसा ही करना शुरू कर दिया, तोता तो क्या कोई मच्छर भी हमारे छल्लों पर नहीं बैठा ।

चिल्ली-लीला, विश्व अनाथ, पंचतन्त्र, मदहोश, आपको पता लगता है गर्मी आ गई है, जब हम देखना चाहते हैं, बन्द करो बकवास, काका के कार्टून, आपस की बातें पिलपिल-सिलबिल ने असीम मनोरंजन किया ।

अब दीवाना बहुत रोचक बनता जा रहा है, कृपया चाचा बातूनी जी से कहें कि वे सवालों के जवाब और भी दीवाने अंदाज में दें । **रमेशचन्द्र एस. के.—जनौली**

दीवाना का कहकहे लगाता हुआ चौदहवां अंक मिला । यह अंक भी और अंकों की तरह मजेदार रहा । किस-किस स्तम्भ की तारीफ करूं ? सभी स्तम्भ एक से बढ़ कर एक होते हैं । फिर भी हर अंकों में 'मोटू-पतलू', 'पिलपिल-सिलबिल' और 'चिल्ली-लीला' बहुत ही रोचक होते हैं । 'इच्छा अमर' आजकल रोचक होता जा रहा है । 'सवाल यह है ?' स्तम्भ शुरू करके आपने हम पाठकों के ऊपर बहुत ही बड़ा उपकार किया है । मोनिका कहानी बहुत ही मनोरंजक लग रही है । अगले अंक का बेकरारी के साथ इन्तजार है ।

अनिल कुमार गुप्ता—तपकरा (म. प्र.)

दीवाना का अंक १५ प्राप्त हुआ । मुखपृष्ठ पर चिल्ली को देखते ही हंसी छूट पड़ी । दीवाना की हर सामग्री अच्छी है । धारावाहिक उपन्यास 'मोनिका' बहुत रोचक है । मेरी तरफ से संगीता जी को शुभ कामनाएं ! दीवाना दिन दुगनी रात चौगुनी उन्नति करे यही हमारी कामना है ।

गुलशन नागपाल—सीवन (कुरुक्षेत्र)

मैं दीवाना का दो साल से नियमित रूप से पाठक हूं । मैं जब भी नया दीवाना खरीदता हूं उसमें नई हंसी देने वाली वस्तु प्राप्त होती है यानी कि चिल्ली । चिल्ली के कारनामें पढ़ कर ही दीवाना का हक अदा हो जाता है । दीवाना का अंक नं० १५ पढ़ा तो बेहद खुशी हुई क्योंकि इसमें सभी लेख हमारे योग्य थे । फिल्मी विज्ञापन अच्छे रोचक लगे । फिल्मी भूत नामक कहानी बहुत अच्छी लगी । लेखक 'मुजाता स्नेही' को मेरी तरफ से बधाई । कृपया लेख आजकल के चलते वाले हीरो के प्रकाशित करें जैसे कि अमिताभ बच्चन आदि ।

कुन्दरा —सिरसा

मुझे दीवाना पत्रिका से शिकायत है । वह यह है कि इस बार फिल्मी कोर्नर पर तमन्ना के बारे में लिखा जाये और उनका पता दिया जाये । और सब तरफ से दीवाना मुझे पसन्द है बस एक बात की कसर है वह मैंने लिख दी है । अगर मेरी यह बात आप मंजूर कर लेंगे तो मैं आपकी बहुत आभारी रहूंगी ।

नीलम सूद—आसाम

तमन्ना पर लेख हम दीवाना के अंक नं० ६ में छाप चुके है । —सं०

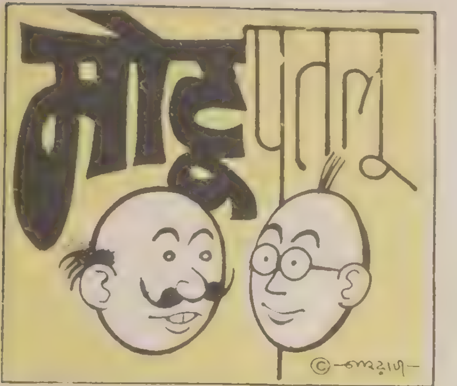
दिली मुबारकबाद पेश करता हूं दीवाना के अंक १५ की अपनी सभी खूबसूरतियों को अपनी आगोश में समेटे हुए शाह जहांपुर की सरजमीं पर जलवा अफरोज हुआ दीवाना हर सप्ताह दीवानों की दुनियां में हंगामा मचा देता है । ये तरक्की करे मैं कामना करता हूं ।

निगार कैसर—शाहजहांपुर

---

४ मई का दीवाना प्राप्त हुआ । चिल्ली की ४२० की ड्रेस देख बहुत हंसी आई । ३१ मार्च की मार से बचने के उपाय पढ़े, फिल्म विज्ञापन देखे, तभी चाचा बातूनी जी मिले और बोले बन्द करो बकवास पहले मोनिका पढ़ो फिर बताओ कि भारत कौनसा लड़ाकू जहाज खरीदे ? तुरन्त बाद ही माई डियर पिलपिल-सिलबिल ने अपने कारनामें दिखा-दिखा कर मोटू-पतलू के पास भेजा, पर वहां अपनी दाल न गली । फैंटम को नये रूप में देख मजा आ गया । पंचतंत्र, परोपकारी, मदहोश भी काबिल-ऐ-तारीफ रहे । **रमेश चन्द्र, एस. के., देवानन्द—जनौली**

दीवाना अंक नं० १४ मिला, मुखपृष्ठ बहुत सुहावना लगा। मोटू-पतलू की रंगीन कहानियां । पिलपिल-सिलबिल, मदहोश बहुत अच्छा लगा । मैं आशा करता हूं कि अगले अंक में भी इसी प्रकार की मनोरंजक कहानियां प्रकाशित करें । अगले अंक की इन्तजार में । **अनुज कुमार शर्मा—(म. प्र.)**



पिछले दिनों प्रसिद्ध वैज्ञानिक डाक्टर सुन्दरम् की हत्या हो गई । इससे पूर्व डा० सुन्दरम् का एक सहयोगी डा० भुल्गांवकर पहले से ही गायब हो चुका था और साइंस लेबोट्री से कुछ महत्त्वपूर्ण फाइलें चोरी हो गई थीं । हत्या के समय किसी ने डा० सुन्दरम् को फोन किया था और जैसे ही उन्होंने फोन का रिसीवर उठाया था, एक गोली चली थी और डा० सुन्दरम् की कनपटी के आर-पार हो गई थी । हत्या के बाद डा० सुन्दरम् के कमरे के दरवाजे अन्दर से बन्द थे । पुलिस दरवाजे तोड़ कर अन्दर पहुंची थी, और यह समझ में नहीं आ रहा था कि दरवाजे खिड़कियाँ और सभी रोशनदान बन्द होने पर हत्यारे ने हत्या कैसे की ? केस की छानबीन में चेलाराम को डा० सुन्दरम् की सेक्रेट्री जयश्री पर शक हुआ । उसने जयश्री को एक आदमी से यह कहते सुना कि हत्या का राज खुलने का डर है । क्योंकि चेलाराम ने पता लगा लिया था कि डाक्टर की मेज पर फोन का जो रिसीवर गिरा पड़ा था उसमें एक बड़ा सुराख था । चेलाराम ने जयश्री और उसके साथी को पकड़ने की कोशिश की पर वे बच निकलने में सफल हो गये । घर पहुंचने पर चेलाराम को एक पत्र मिला, जिसमें लिखा था कि डाक्टर झटका का अपहरण कर लिया गया है, यदि चेलाराम ने इस केस की छानबीन बन्द न की तो डा० झटका की हत्या कर दी जाएगी । इसके बाद के हंगामे आगे देखिये ।





अन्दर जाने की बजाए छुपकर पता लगाओ, चक्कर क्या है ? अपहर्णकर्ताओं ने डाक्टर झटका को छोड़ क्यों दिया ?
लगता है मोटू-पतलू से कोई बहस हो रही है ।
मैं बीमार नहीं हूं भाई ! मैं किस बात का इंजेक्शन लगवाऊं ?
इसकी एक मत सुनो और इंजेक्शन ठोक दो ।
जी बहुत अच्छा ।
अरे मर गया । मुझे कोई बीमारी नहीं थी अब सर चकरा रहा है । यह कैसा इंजेक्शन लगा दिया तुमने ?
अब इस अंडे जैसी खोपड़ी वाले के भी इंजेक्शन लगा दो !
जी. बहुत अच्छा ।
मैं तो तुम्हारे हाल चाल पूछने आया था । तुमने मेरा हाल बिगाड़ दिया
मोटू बेहोश हो गया । लगता है डाक्टर झटका जहर के इंजेक्शन लगा रहा है ।
डाक्टर की खोपड़ी पर कु
चमक रहा है । जैसे ट्रांजिस्ट
के एरियल की घुंडी होती है
तुम मुझे अपनी चोंच में उठाकर डाक्टर झटका की खोपड़ी के पास ले चलो । मैं इसका राज पता लगाऊंगा । मैं इतना छोटा हूं कि कोई मुझे देख भी नहीं सकता ।
पतलू भी बेहोश हो गया है



डाक्टर झटका की खोपड़ी के एन ऊपर पहुंचकर अंगूठा नन्द उल्लू की चोंच से फिसल गया।
अरे, यहाँ तो ऐसा मालूम होता है कि डाक्टर झटका के सर में कोई ट्रांजिस्टर फिट है। और यह इसके एरियल की घुंडी है।
कोई डाक्टर झटका को आदेश दे रहा है। जिसका यह पालन करता है।
ब्रिप···बिर··· हैल्लो हैल्लो। तुम्हारे सर पर कोई है।
कोई मच्छर होगा।
मच्छर नहीं है। मगरमच्छ है। सर पर हाथ मारकर इसे पकड़ो।
पर जैसे ही डा० झटका ने अंगूठा नन्द को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया। वह छलांग मारकर उसके कालर में घुस गया।
यहाँ तो कोई नहीं है। मैंने सारे सर पर अच्छी तरह देख लिया है
बच कर भाग गया। कोई बात नहीं। जिन दो आलूबुखारों को इंजेक्शन लगाकर बेहोश किया है। उन्हें बोरी में बन्द करके यहां ले आओ।


डा० झटका ने मोटू और पतलू को बारी बारी बोरियों में बन्द किया।
और क्लीनिक के बाहर खड़ी एक गाड़ी में लाद कर चल दिया। दूसरी गाड़ी में चेलाराम उसके पीछे-पीछे था।
गाड़ी एक बड़ी बिल्डिग के पास जाकर रुक गई। दो आदमी बिल्डिग के बाहर आए और मोटू पतलू से भरे बोरों को उठाकर अन्दर ले गये।
छुपता छुपाता चेलाराम भी अब बिल्डिग के अन्दर छानबीन कर रहा था।
कदम-कदम पर इस बात का डर था कि कहीं उसे कोई देख न ले।
एक जगह पहुंचकर उसने एक कमरे में अन्दर झांक कर देखा। एक बोरा तो अब तक बन्द था। दूसरे बोरे से मोटू को निकालकर कुछ लोगों ने एक अजीब मशीन पर फिट कर दिया।


डाक्टर झटका के ब्रेन में इलेक्ट्रोनिक कम्प्यूटर फिट करने के बाद इस पहली टेस्टिंग में हमारा तजुर्बा कामयाब रहा है । वेव कंट्रोलर पर हम इसे जो आदेश देते हैं । यह उनका पालन करता है ।
अब इस मोटे बैंगन के दिमाग में भी माइक्रोवेव कम्प्यूटर फिट हो जाएगा तो इसके दिमाग से भी हम अपना मन चाहा काम ले सकेंगे ।
यह भी और आदमियों को अपहरण करके लाएगा । और हम बहुत सारे दिमागों को अपने कंट्रोल में करके अपनी मर्डर बाई टेलीफोन योजना को सफल बना सकेंगे ।
और दुनिया का कोई आदमी कभी पता नहीं लगा सकेगा कि डाक्टर मुल्गांवकर ने डाक्टर सुन्दरम के आविष्कार को क्या से क्या बनाकर कितना रुपया कमाया ।
प्रेशर लाईन ठीक है !
हाई वोल्टेज का स्विच दबाओ !
ग···
जैसे ही हाई वोल्टेज का स्विच दबा, एक चीख की आवाज आई ।
फिर दूसरे ही पल बिल्कुल शांति थी ।
मोटू को मशीन से नीचे उतारकर देखा गया तो उसके सर पर माईक्रोवेव आटो कम्प्यूटर फिट हो चुका था ।
हमारी हर बात मानोगे ?
हां मानूंगा ।
हम कहें तो कुएं में कूद पड़ोगे ?
हां कूद पड़ूंगा ।
किसी की हत्या करने को कहें तो करोगे ?
हां करूंगा ।
वैरी गुड । प्रयोग कामयाब है । अब दूसरी बोरी खोलो ।



इस षडयंत्र के जबरदस्त धमाकों के लिए दीवाना के रंगीन पृष्ठों पर इन कलाकारों से फिर मिलेंगे।


छुट्टन मिट्ठन
एक रोज समुद्र तट पर मछली पकड़ने गये तो उनके हाथ एक ऐसी मछली लगी जिसे देखकर वे दंग रह गये।
मछली लेकर वे घर की ओर भागे
तो उनकी खुशी का ठिकाना न था।
आज जैसे उन्हें स्वर्ग की सबसे बड़ी दौलत मिल गई थी।
अपने मित्रों को उन्होंने बताया कि
जलपरी और जलसुन्दरी की कहानियां तो बहुत पढ़ी होंगी।
कीकत में अगर कुछ
खना है तो उनके
घर चले आएं



ने ... आई को फोन किया। ग्रखबार वालों ... घंटा बजाई ग्रौर टेलीविजन वालों ... बताया कि ... सबसे ... ग्राश्चर्य देखना चाहते है तो ग्रपने ग्रपने रिपोर्टर ग्रौर कैमरे लेकर छुट्टन-मिट्ठन के यहां ग्रा जाएं।
... खबर सारे शहर में शोर मच गया था। लोग छुट्टन मिट्ठन के मकान की ग्रोर टूटे पड़ रहे थे।
ग्रखबार वाले, रेडियो वाले, टेलीविजन वाले। इस समाचार को कवर करने के लिये एक दूसरे से बाजी ले जाना चाहते थे। डॉक्टर, वकील, नेता, प्रोफेसर, टीचर दुकानदार, जो भी इस खबर को सुन रहा था वह छुट्टन ग्रौर मिट्ठन के घर की ग्रोर दौड़ रहा था।
पर जब सब लोग घर के ग्रन्दर पहुंचे तो
मछली ? कौन-सी मछली ? वह तो मैंने पका दी !

खेल खेल में

मिठाई लाल 'पानवाला'—दिल्ली

प्र० : चन्द्रशेखर अभी तक कितने टैस्ट खेल चुके हैं तथा कितनी विकट ले चुके हैं ?

उ० : चन्द्रशेखर ५० टैस्टों में २२२ विकटें ले चुके हैं।

बलवन्त सिंह—गढ़वाल

प्र० : विजय ने 'जिम्मी कॉनर्स' को कौन से मैच में पराजित किया है।

उ० : विजय ने कानर्स को कुछ वर्ष पूर्व वॉल्वोकार प्रतियोगिता में हराया था।

हरजीत सिंह—बल्हारशाह

प्र० : भारतीय कप्तान बिशन सिंह बेदी ने अपनी कप्तानी में अब तक कितने स्वर्ण पदक जीते हैं और यह कौन से देश के विरुद्ध।

उ० : क्रिकेट में स्वर्ण पदक नहीं होता रबर अथवा कप ट्राफियां होती हैं।

प्र० : नेपाल में कौन-कौन से खेल खेले जाते हैं।

उ० : नेपाल अभी विश्व खेल नक्शे पर नहीं आया है। वैसे वहां स्थानीय रूप से सभी खेल खेले जाते हैं।

विनोद पुरी रंजू—लुधियाना

प्र० : क्रिकेट अभी तक कौन-कौन से देश खेलते हैं ?

उ० : इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया, वेस्टइंडीज, भारत, पाकिस्तान, न्यूजीलेंड, श्री लंका तथा अब मलेशिया, सिंगापुर व हांग-कांग भी खेलने लगे हैं। (इनके अतिरिक्त अब दक्षिणी अफ्रीका भी खेलता है।)

प्रहलाद जसवानी—मंडला

प्र० : भारती के आखरी तीन विकेट क्रिकेट में जल्दी क्यों गिर जाते हैं ?

उ० : और कोई विश्वासनीय बल्लेबाज न होने के कारण।

अतुल रोशन—मुजफ्फर नगर

प्र० : अरब देशों में सबसे प्रिय खेल कौन-सा है ?

उ० : अब तक अरब देशों में रेगिस्तानी जलवायु के कारण खेलों का नितान्त अभाव रहा है। यदाकदा ऊंट दौड़ें हुआ करती थीं परन्तु अब तेल प्राप्ति के बाद अरब देश जैसे ही अमीर बने हैं यहीं शहर बस रहे हैं और खेलों का भी प्रचार हो रहा है। कई देशों में यूरोप से कोच लाखों डालर में कांट्रैक्ट कर लाये जा रहे हैं तथा वातानुकूलित स्टेडियमों का निर्माण हो रहा है।

राजेश माचीवाल—इन्दौर

प्र० : गवास्कर ने टैस्ट जीवन में कितने अर्द्ध शतक लगाए हैं।

उ० : गवास्कर ने टैस्टों में १४ अर्द्ध शतक लगाये हैं और इतने ही शतक।

प्र० : गावस्कर व विश्वनाथ ने टैस्ट जीवन के कुल रन कितने बनाए।

उ० : दोनों साले जीजा ३००० टैस्ट रनों की संख्या पार कर चुके हैं और लगभग साथ-साथ ही बढ़ रहे हैं।

आमोद गर्ग—इलाहाबाद

प्र० : भारत के विकट कीपर किरमानी ने अपने टैस्ट जीवन में कितने रन और कितने कैंच लिए हैं ?

उ० : किरमानी ने अब तक ७६५ रन बनाये हैं उन्होंने ३५ कैंच लिए और १५ स्टम्प किये—उनका आस्ट्रेलिया में प्रदर्शन बहुत ही अच्छा रहा। विकेट कीपिंग के अतिरिक्त बल्लेबाजी में भी वह फर्स्ट क्लास रहे। यही कारण है कि पैकर ने किरमानी को पैकर सीरीज में शामिल होने के लिये अनुबंध करने का निमन्त्रण भेजा है अभी उन्होंने कोई फैसला नहीं किया केवल एक और भारतीय खिलाड़ी को पैकर ने निमन्त्रण भेजा है वह हैं सुनील गवास्कर।

अमित कोटिया—जयपुर

प्र० : घावरी और मदनलाल में ज्यादा अच्छा आलराऊन्डर कौन है ?

उ० : हमारे विचार में घावरी श्रेष्ठ है—यूं मदनलाल भी कम नहीं है। परन्तु मदन को उसकी एक ही कमजोरी मार जाती है वह है बम्परों के मुकाबले न टिक पाना। अगर विरोधी टीम के पास फ़ॉस्ट बालर न हो तो निश्चय ही मदन श्रेष्ठ होगा। मदन की फील्डिंग अति उत्तम दर्जे की है परन्तु आज के अन्तर्राष्ट्रीय खेल में फॉस्ट बालर हर टीम के पास होते हैं (भारत को छोड़कर)

विनय मिगलानी—रेवाड़ी

प्र० : गवास्कर, पटेल, टर्नर, ग्रेग, चैपल की बल्लेबाजी को क्रम दीजिए।

उ० : ग्रेग, चैपल, गवास्कर, टर्नर —पटेल

उत्तम कुमार शाही—बीरगंज, नेपाल

प्र० : क्या फुटबाल एक अन्तर्राष्ट्रीय खेल है ? अगर हां तो इस खेल को विश्व में सर्वप्रथम किस देश ने खेला ? यह खेल किस साल में खेला गया ? और कब से इस खेल को अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त हुई ?

उ० : फुटबाल तो सर्वाधिक लोकप्रिय अन्तर्राष्ट्रीय खेल है। जितनी गर्मी इस खेल को लेकर होती है वह किसी और खेल में नहीं—फुटबाल अब महिलायें भी खेलने लगी हैं। फुटबाल का इतिहास बीते समय की गहराइयों तक चला जाता है, जहां साफ-साफ कुछ नजर नहीं आता। सच पूछो तो यूं कहा जा सकता है कि जब मानव ने पैर से किक मारना शुरू किया होगा तब तक फुटबाल का इतिहास जायेगा—हां उन्नीसवीं शताब्दी से लीग वगैरह क्लबों की स्थापना होने लगी तथा लिखित नियमों की शुरुआत हुई।

ए० जब्बार अकेला—बीकानेर

प्र० : भारत और अमेरिका के बीच क्रिकेट का मैच कब होगा ?

उ० : कभी नहीं—अमेरिका में क्रिकेट नहीं खेला जाता वहां क्रिकेट का अपना दूसरा रूप बेसबाल के नाम से खेला जाता है।

संजीव चड्ढा—दिल्ली

प्र० : संसार में सबसे पहले क्रिकेट का मैच कब शुरू हुआ और किस-किस के बीच हुआ था ?

उ० : आस्ट्रेलिया व इंगलैंड के बीच १८७७ में मेलबोर्न में।

संजय कुमार—सीतापुर

प्र० : 'चेतन चौहान' का सर्वाधिक स्कोर कितना है ?

उ० : ९० रन।

खेल-खेल में

दीवाना साप्ताहिक

८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,

नई दिल्ली-११०००२

बास्केटबाल कैसे खेलें

दण्ड

१. यदि इस नियम का उल्लंघन केवल मुक्त-क्षेपकर्ता का ही है तो कोई अंक नहीं दिया जावेगा। ज्योंही नियम का उल्लंघन हो, खेल रुक जाएगा। गेंद पार्श्व रेखा पर सीमा पार पर मुख्य-क्षेपकर्ता खिलाड़ी के विपक्षी टीम को जावेगी। यदि तकनीकी फाउल प्रशिक्षक अथवा स्थानापन्न खिलाड़ी द्वारा हुआ है तो मुक्त-क्षेपक की टोली के पक्ष में सीमाबाह्यता पार्श्व-रेखा पर केन्द्रवृत के सामने दे दी जाती है और खिलाड़ी की त्रुटि होने पर मुक्त-क्षेपकर्ता की विरोधी टोली को मुक्त-क्षेप रेखा के सामने।

२. यदि (ख) में वर्णित उल्लंघन मुक्त-क्षेपक किसी साथी द्वारा होता है तो कोई अंक फलांकित न होगा और उपर्युक्त रीति से उल्लंघन दंडित किया जायेगा। यदि (ख) में वर्णित उल्लंघन दोनों टोलियों द्वारा घटित होता है तो कोई फलांकन होकर मुक्त-क्षेप रेखा पर उछाल गेंद (जम्प-बाल) के साथ खेल फिर आरम्भ कर दिया जाता है। यदि (ख) में वर्णित उल्लंघन मुक्त-क्षेपक के विरोधियों द्वारा घटित होता है तो दण्ड उप-नियम ३३ के दण्ड विधान के अनुसार दिया जायेगा।

३. यदि (ग) में वर्णित उल्लंघन मुक्त-क्षेपकर्ता के साथी द्वारा घटित होता है और मुक्त-क्षेप सफल हो जाता है तो गोल गिना जायेगा तथा उल्लंघन की उपेक्षा कर दी जावेगी। यदि मुक्त-क्षेप सफल नहीं होता तो उल्लंघन उपर्युक्त ढंग से दण्डित किया जावेगा। तथापि, यदि गेंद घेरे से चूककर सीमा के बाहर या भीतर गिर जाती है तो विरोधियों के द्वारा मुक्त-क्षेप रेखा के सामने पार्श्व रेखा से यह गेंद खेल में लुढ़का दी जावेगी।

४. यदि (ग) में वर्णित उल्लंघन मुक्त-क्षेपक के केवल विरोधियों द्वारा घटित हुआ है तो क्षेप के सफल होने पर गोल गिना जाता है, उल्लंघन की उपेक्षा कर दी जाती है, परन्तु यदि क्षेप असफल हो जाता है तो उसी क्षेपकर्ता को एक बार फिर उन्हीं दशाओं में, जो मूल क्षेप के समय थी, गेंद फेंकने का अवसर दिया जायेगा। ऐसी अवस्थाओं में क्षेप की समाप्ति से पूर्व गेंद मृत नहीं होती।

५. यदि (ग) में वर्णित उल्लंघन दोनों ही टोलियों द्वारा घटित होता है और मुक्त-क्षेप सफल हो जाता है तो गोल गिना जायेगा और उल्लंघन की उपेक्षा कर दी जावेगी। यदि क्षेप सफल नहीं हुआ तो मुक्त-क्षेप रेखा पर उछाल-गेंद के साथ खेल फिर आरम्भ कर दिया जावेगा। यदि क्षेप बहुमुखी है तो सीमाबाह्य तथा उछाल-गेंद की संविधायें केवल अन्तिम मुक्त-क्षेप में दिए गए उल्लंघन पर लागू होगी।

खेल के मध्यान्तरों में तकनीकी त्रुटि (फाउल)

जब अर्द्ध-समय के मध्यान्तर या अतिरिक्त समय के पूर्व अवकाश में तकनीकी फाउल दिया जाय तो क्षेप का प्रयास होने के बाद केन्द्र में जम्प-बाल द्वारा खेल चालू किया जायेगा।

मुक्त-क्षेप चूक जाने पर खेल का चालू रहना

यदि गोल होने से चूक गया है तो मुक्त-क्षेप के बाद गेंद का खेलना चालू रहेगा या यदि एक से अधिक मुक्त-क्षेप दिए गये हैं तो गेंद का खेलना चालू रहेगा, यदि अन्तिम मुक्त-क्षेप चूक गया हो। यदि गेंद रिंग या बैंक बोर्ड से चूककर सीमा पार कर जाय तो पार्श्व-रेखा से विपक्षी टीम द्वारा खेल चालू किया जावेगा। यदि गेंद रिंग से चूक जाय और सीमा के अन्दर गिरे तो कोई भी खिलाड़ी गेंद से नहीं खेलेगा और मुक्तक्षेप-रेखा के विपरीत बिन्दु पर पार्श्व-रेखा से विपक्षी टीम द्वारा खेल चालू किया जावेगा।

आचरण सम्बन्धी नियम

परिभाषा

खेल के उचित संचालन के लिए प्रशिक्षक और स्थानापन्न खिलाड़ियों सहित दोनों टीमों के सदस्यों के, अधिकारियों तथा उनके सहायकों के साथ सहयोग की आवश्यकता है।

दोनों टीमों को अधिकार है कि वे विजय प्राप्त करने के लिए अपना भरसक प्रयत्न करें, किन्तु ऐसा खिलाड़ी भावना तथा सही खेल से किया जाना चाहिए।

जब ऐसे सहयोग या भावना का अतिक्रमण जान-बूझ कर या बार-बार हो तो तकनीकी फाउल दिया जाना चाहिए और इन नियमों के निम्नलिखित उप-नियमों के अनुसार दण्ड देना चाहिए।

खिलाड़ी द्वारा तकनीकी फाउल

कोई भी खिलाड़ी अधिकारी द्वारा दिए गए आदेशों की उपेक्षा नहीं करेगा या खिलाड़ी भावना के विरुद्ध हथकंडे नहीं अपनायेगा जैसे—

(क) अधिकारी को विनम्रता के बिना सम्बोधित करना या उससे सम्बन्ध स्थापित करना।

(ख) आचरण-भ्रष्टता का प्रयोग करना।

(ग) विपक्षी खिलाड़ी की आंखों के पास हाथ हिला कर उसकी दृष्टि में बाधा पहुंचाना।

(घ) खेल को तुरन्त चालू करने में बाधा पहुंचाकर खेल में देरी करना।

(ङ) जब उसके विरुद्ध फाउल दिया जाय तो तुरन्त अपने हाथ को ऊंचा नहीं करना।

(च) रेफ्री या अंक-गणक को सूचित किए बिन अपना नम्बर बदल लेना।

(छ) अंक-गणक को सूचित किए बिना स्थानापन्न खिलाड़ी के रूप में कोर्ट में प्रवेश करना या अधिकारी को सूचित किए बिना प्रवेश करना।

तकनीकी उल्लंघन, जो साधारणतया बेइरादतन हों, जिनसे खेल पर कोई अन्तर नहीं पड़ता हो या वे प्रशासन सम्बन्धी हों तो तकनीकी फाउल नहीं माने जायेंगे, जब तक कि अधिकारी द्वारा अपराधी खिलाड़ी या उसके कैप्टेन को चेतावनी दिए जाने पर भी उनकी पुनरावृत्ति न हो।

तकनीकी उल्लंघन, जो जान-बूझकर किये गये हों या खिलाड़ी-भावना के विपरीत हों अथवा जिससे अपराध करने वाले खिलाड़ी को अनुचित सुविधा मिली हो, तो शीघ्र ही तकनीकी फाउल करा दिये जाने चाहियें और उनका दण्ड दिया जाना चाहिए।

दण्ड—प्रत्येक अपराध के लिए फाउल दिया जाएगा और प्रत्येक फाउल के लिए विपक्षी को दो क्षेप दिये जायेंगे। इस उल्लंघन के बार-बार किये जाने पर खिलाड़ी को खेल से बाहर भी निकाला जा सकता है।

क्रमशः



फैण्टम और डीयाना की नौकरी ।
तागार्कीमो का जनरल ।
इनके दर्शन बहुत कम लोगों को नसीब होते हैं···
!
!
हाँ, अब तुम पलकें उठाकर एक महान मनुष्य को देख सकते हो···
मैं इस आदरभाव का स्वागत करती हूं लेकिन अब खड़ा होना चाहती हूँ ।
नहीं ! जब तक खड़े होने का आदेश नहीं मिलता !
पहले की तरह झुके रहो !
क्षमा करना अब मैं और इसी हालत में नहीं रह सकती !
जनरल तारा की अनुमति के बिना उसके सामने खड़े होने का साहस कोई नहीं कर सकता !
डियाना भगवान के लिए
जनरल···हमने तुम्हारी प्रचलन-रीति को निभाया है अपने घुटने और हाथ जमीन पर टेक कर···
हम यू०एन० के सरकारी काम से यहाँ बातचीत करने आये हैं···न कि यहाँ खेल तमाशा करने···
मैं इस महिला के साहस की प्रशंसा करता हूं दोनों के लिए कुर्सी लाओ ताकि बात शुरू करें ।
तुमने हमारे यहाँ की जेलें देखी···
सब बहुत अच्छी हैं यू०एन को यही रिपोर्ट देनी है ।
मगर···जनरल अभी हमें और जेलें देखनी हैं ।
ओह ! आह ! हां···
जनरल, जो कुछ भी हमने देखा वह सब बनावटी था धोखा था···पूर्व निर्धारित नाटक था हमको मूर्ख बनाया गया था ।
!
एक बार फिर पूछता हूं बताओ तुमने उनको कागज दिये थे···?
मेजर···दन इक फ बुज जनरल···दनइ
!
क फ बुज बुज··· बुज··· बुज···
!!
हमारे बारे में झूठ मूठ लिखकर एक देशद्रोही ने तुम्हें कागज दिये हैं ! लाओ कहाँ हैं वे कागज ?
कागज···? कौन से कागज जनरल ?
?



गुमनाम है कोई ?

प्रतियोगिता 32

इनाम 30 रु०



आपको इन तीनों के नाम बताने हैं और बीच वाली क्या दीवानी बात कह रही है ?

यदि एक से ज्यादा सही हल हुये तो इनाम की राशि विजेताओं में बराबर-बराबर बांट दी जायेगी, अपने हल केवल पोस्टकार्ड पर ही इस पते पर भेजे :- गुमनाम है कोई प्रतियोगिता, ८ब, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-2 / हमारे कार्यालय में पहुचने की अंतिम तिथि :—
२४ जून १९७८ — एक पोस्टकार्ड पर केवल एक ही हल भेजे।

क्यों और कैसे

प्र० : पैराशूट क्या है, इसका आविष्कार किसने और कब किया ?

रंजन शर्मा गाफिल—दुनियाजान, आसाम

उ० : जरा सोचिये क्या ऐसा सम्भव है कि पृथ्वी से तीन मील ऊपर हवा में से कूद कर भी, पृथ्वी पर पहुंचने पर आपको केवल ऐसा झटका लगे, मानो आप केवल १२ फुट ऊंची मुंडेर से कूदे हों। ऐसा होना पैराशूट के साथ कूद कर सम्भव है। पैराशूट केवल एक बड़ी छतरी है जो हवा में प्रतिरोध शक्ति पैदा करती है। पैराशूट के साथ मनुष्य बहुत धीमी गति से नीचे गिरता है और इसी कारण उसे चोट नहीं लगती।

पैराशूट के साथ उड़ने का विचार मनुष्य का सबसे पहला उड़ने का विचार हो सकता है। सन् १५१४ में लियोनर्ड-डी विनसाई ने अपनी डायरी में पैराशूट का रेखाचित्र अंकित किया था। सन् १५६५ में फोस्टो विरानजियो ने व्यावहारिक पैराशूट के बारे में लेख छपवाया था। सन १७८५ में जे. पी. बर्लेन्चर्ड नामक फ्रांसिसी संसार के सबसे पहले पैराशूट प्रयोग करने वाले मनुष्य समझे जाते हैं। इन्होंने एक टोकरी में बैठे कुत्ते को पैराशूट की सहायता से नीचे उतारा था, इस टोकरी को गुब्बारों की सहायता से पहले ऊपर उड़ाया गया था, इनका कहना था कि स्वयं भी पैराशूट की सहायता से सन् १७९३ में पृथ्वी पर उतरे थे, परन्तु इस गिरने में उनकी टांग टूट गई थी।

दूसरे एक फ्रांसिसी युवक को ही सबसे पहले नियमित रूप से पैराशूट प्रयोग करने का श्रेय प्राप्त है। इन्होंने सन् १७९७ में पैराशूट की सहायता से २००० फुट से सही सलामत कूद कर जनता के सामने प्रदर्शन किया था। ये प्रदर्शन २२ अक्टूबर सन् १७९७ को फ्रांस में हुआ था। ये पैराशूट सफेद कैन्वस का था इसका आकार २३ फुट व्यास की बड़ी छतरी के समान था। इस छतरी के बीचों बीच १० इंच व्यास की एक लकड़ी की चक्रिका चिपकाई गई थी जिसमें हवा के बाहर निकलने के लिए एक छेद बनाया गया था।

सन् १९१२ में पैराशूट की सहायता से कैप्टन बेरी ने उड़ते हुए हवाई जहाज से सफल छलांग लगाई थी। सन् १९१३-१४ में इस पर बहुत विचार विमर्श हुआ कि वायुयान से छलांग लगाने में पैराशूट का प्रयोग किया जाना चाहिए या नहीं। १९१४ में होने वाले पहले महायुद्ध के समय तक इस बात का निर्णय नहीं हो पाया था। इस कार्य में विशेष विवाद की बात ये थी कि पैराशूट की बड़ी छतरी के खुलने पर विमान चालक विमान को इससे अलग करने में सफल हो पायेगा या नहीं।

प्र० : क्या रेगिस्तान सदा ही गर्म होते हैं ?

रमेश भुटानी—रेवाड़ी

उ० : रेगिस्तान के नाम से सदा बहुत गर्म प्रदेश का ही अनुमान होता है। वास्तव में संसार के अधिकतर विख्यात रेगिस्तान वहीं हैं, जहाँ सूरज बेदर्दी से चमककर सब कुछ सुखा देता है। परन्तु इसका ये अर्थ नहीं कि रेगिस्तान केवल वही स्थान होना चाहिये, जो सदा बहुत गर्म हो। रेगिस्तान की परिभाषा से पता चलता है ऐसा क्यों नहीं है। 'रेगिस्तान वह स्थान है जहाँ नमी की कमी के कारण केवल विशेष प्रकार का जीवन ही पाया जाता है।

गर्म रेगिस्तानों में वर्षा बहुत कम होती है इसलिए ये परिभाषा इन प्रदेशों पर पूरी उतरती है, परन्तु ऐसे प्रदेश जहाँ पानी जम कर ठोस बर्फ का रूप ले लेता है तथा पोधों द्वारा इस्तेमाल नहीं किया जा सकता, वो भी रेगिस्तान ही कहलायेंगे। उदाहरण के लिए उत्तरध्रुवीय प्रदेश का अधिक भाग रेगिस्तान ही है। यहाँ पूरे वर्ष में केवल १५ इंच वर्षा होती है, यहाँ का अधिकतर पानी जमा हुआ है, इसलिए इन्हें ठीक ही ठंडा रेगिस्तान कहा जाता है। मध्य ऐशिया का विख्यात गोबी रेगिस्तान भी सर्दियों में बहुत ठंडा होता है।

संसार में पाये जाने वाले अधिकतर रेगिस्तान भूमध्य रेखा के उत्तर और दक्षिण में स्थित हैं। ये अधिक वायुमण्डलिये दबाव, जो वर्षा को बरसने से रोकता है, के कारण बनते हैं। भूमध्य रेखा से दूर पाये जाने वाले रेगिस्तान उस प्रदेश के वर्षा की छाया 'rain shadow' में होने के कारण बनते हैं। यहाँ के ऊँचे पर्वत सारी वर्षा अपने समुद्रिय भाग पर ले लेते हैं और इनका अन्दरूनी भाग सूखा रह जाता है।

रेगिस्तान किसी भी बड़ी नदी का उदगम स्थान नहीं है, हाँ कोई कोई नदी रेगिस्तान को पार अवश्य करती है। नाइल नदी, इसी प्रकार की बड़ी नदी है जो सहारा रेगिस्तान के बीच से होकर बहती हुई समुद्र की ओर अग्रसर होती है।

प्र० : नरभक्षी मनुष्य आदमियों को क्यों खाते हैं ?

अमित मल्होत्रा—जालंधर

उ० : नरभक्षी होना या मानव मांस खाना सोचने में भी बहुत डरावना कार्य है। परन्तु संसार में पायी जाने वाली कुछ जंगली जातियों में यह प्रथा प्रचलित थी तथा सम्भव है, आधुनिक युग में भी कुछ जंगली जातियों में अभी भी विद्यमान हो।

नरभक्षियों के बारे में सबसे मुख्य जानने योग्य बात ये है कि ये लोग मानव मांस स्वाद के कारण नहीं खाते बल्कि इनके इस मांस के खाने के पीछे इन जातियों की कुछ धार्मिक प्रथायें सम्बन्धित हैं। कुछ नरभक्षी पुण्य कार्य समझ कर भी ऐसा करते हैं। उदाहरण के लिए हजारों साल पहले के जंगली मानव का विचार था कि ये जिसे खाते हैं, उसकी आत्मा उनके शरीर में प्रवेश कर जाती है। यदि कोई शेर खाये तो शेर के समान बलवान, हिरण खाने से तेज दौड़ने वाला तथा लोमड़ी का मांस खाकर उसके समान चालाक हो जाता था। इसी कारण ये लोग जो अपने माता पिता को बहुत उच्च और आदरणीय मानते थे उन्हें खाने के अधिकाधिक इच्छुक रहते थे।

कुछ जातियों में दुर्गम अपराध करने पर अपराधी को देवताओं के सामने बलि चढ़ाकर दंडित किया जाता था। इस मानव का मांस ये लोग पुण्य प्रसाद के रूप में खाते थे। प्राकृतिक मृत्यु से मरने वाले का मांस नहीं खाया जाता था।

सबसे पहले स्पेन निवासियों ने उत्तरी भारत की जंगली जातियों में इस प्रथा को देखा था। कुछ लोगों के अनुसार न्यूगिनी के भीतरी प्रदेश में अब भी ऐसी जातियां हैं।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२



सत्यम् शिवम् हरिजनम्

फिल्मी सितारों के नेक ख्याल

हरिजनों पर अत्याचार आजकल देश में गर्म बहस का विषय है। आये दिन कहीं न कहीं किसी हरिजन को जला डालने अथवा मारने की खबर पढ़ने को मिलती है। हमने अपने विशेष संवाददाता जमनादास को फिल्म स्टारों के इस विषय पर विचार जानने के लिए भेजा! हमारा प्रश्न था 'हरिजनों पर बढ़ते अत्याचार कैसे रोके जा सकते हैं?' विभिन्न स्टारों के उद्गार पढ़िए—



हरिजन समस्या को छोटी-सी बात नहीं समझना चाहिये। सबको यह समझ लेना चाहिये कि एक जाति की रजनीगंधा को देश में महकाना है।



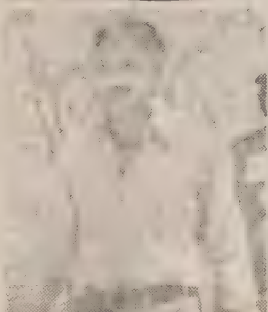
यह समस्या तभी सुलझेगी जब हरिजनों में चेतना जागेगी। वे अपने हक के लिए सत्ता के दरवाजे पर दस्तक देंगे।



हमको यह समझना चाहिए कि हरिजन हमारे शत्रु नहीं हैं।



मैं आज तक परदेस में थी. अतः हरिजन जैसी देसी समस्या पर मैं कुछ नहीं कह सकती।



सभी हरिजनों को यह प्रण करना है कि फिल्म फेयर उन्हें एवार्ड दे तो वह अस्वीकार कर दें।



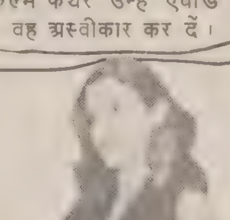
हरिजन समस्या तभी से है जब ५० वर्ष पहले मैंने फिल्मों में प्रवेश किया था। आज भी आशा है यह डायमंड जुबली मना लेगी।



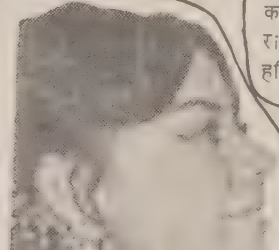
खेद की बात है हरिजनों को गाइड करने वाला नेता नहीं मिला है। उन्हें राजनीतिक कलाबाज ही मिले हैं। हरिजनों को सताने वालों के खिलाफ वारंट निकलने चाहियें।



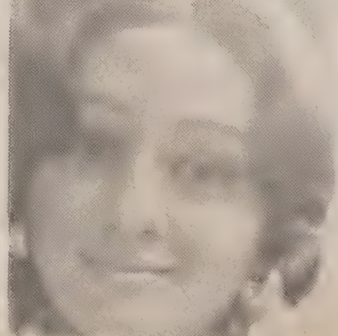
जमींदार समाज ने हरिजन वर्ग को खिलौना समझ रखा है। वे उन्हें आदमी सड़क का बनाने पर तुले हैं विश्वनाथ विष्णु के सामने यह सब हो रहा है : आदमी, आदमी नहीं रहा।



हरिजनों की बीवियों को चाहिये कि चाहे हरिजनों का सवर्णों के खिलाफ आंदोलन फ्लाप हो जाये। फिर भी वे पतियों का साथ न छोड़ें।



बड़े दुख की बात है कि देश को आजाद हुए ३० वर्ष हो गये परन्तु हरिजन अब तक स्पोर्टिंग रोल करने पर ही मजबूर किये जा रहे हैं।



सब पुरुषों को रामायण की स्टडी करना चाहिए।



हमको हरिजनों और दूसरे वर्गों के बीच की नफरत की दीवार को तोड़ना होगा। हरिजनों और पिछड़े वर्गों को गरीबी की जंजीर से मुक्त करना होगा। हरिजनोद्धार के लिये गंगा की सौगंध खाना होगा।



क्यों रे कालिया, हरिजनों की रखछा के लिए उन दो फौजियों को रखना ठीक रहेगा ? बोलता क्यों नहीं......



मैं पगला जट यमला दीवाना, इत्ती सी बात न जाना, ओये, ओये, ओये, ओये।



हरिजन अत्याचारों के लिये मुझे अमीर किसानों पर शक है। दलित वर्गों को मुक्ति दिलाने के लिए सबको अपने कर्म का पालन करना होगा।



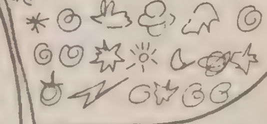
हरिजनों में आचार्य रजनीश के टेप मुफ्त बांट दिये जाने चाहियें।

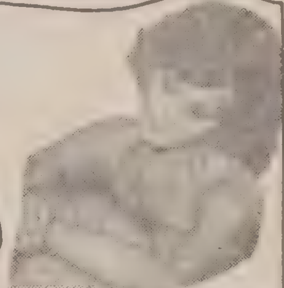


हरिजनों पर अत्याचार चरित्रहीन व्यक्तियों का काम है। कबीर भी हरिजन थे। उनके दोहों से समाज के उच्चवर्ग को सीखना चाहिए।



जो हरिजनों पर अत्याचार करते हैं वह





केवल अत्याचारों का राग अलाप कर मगरमच्छी आंसुओं के सावन-भादों बरसाने का लाभ नहीं होगा। जमींदारों को तंगदिली छोड़ दिलदार बनना होगा।



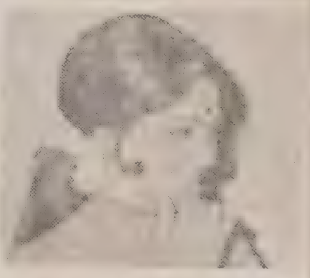
आज लोग हरिजनों के प्रति अपना फर्ज भूल रहे हैं। हरिजनों को जीने की राह नहीं दिखाई दे रही है। सवर्णों को सहृदयता का परिचय देना होगा, तभी प्रेम की खुशबू फैलेगी।



चाहे कोई इन्हें हरिजन कहे कहता है तो कहता रहे, ये अत्याचार के तूफानों में घिरे ये क्या करें ? याऽऽहूऽऽ



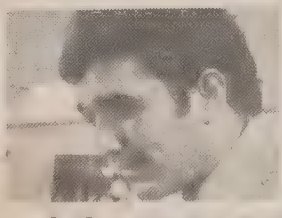
हमें हरिजनों के प्रति घृणा को तलाक देना होगा।



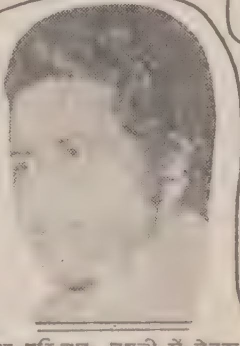
आइये हम प्रतिज्ञा करें कि हरिजनों को हम भाई-भतीजा समान समझेंगे। उन्हें पलकों की छांव में बिठायेंगे।



इसके लिये देश में चोचलिज्म लाना होगा। दस्वी दानिया फिर मिलेंगे।



हमें गांधी जी का रामराज्य का सपना फ्लॉप नहीं होने देना है। सबसे मेरा अनुरोध है कि



हर हरिजन बस्ती में नेहरू, शास्त्री, गांधी की बुतें लगनी चाहियें।



हरिजनों और सवर्णों को मिल कर कव्वालियों का प्रोग्राम करना चाहिये।



हरिजनों पर अत्याचार करने वालों को समाज का विलेन मान लेना चाहिये. उनसे वही सलूक हो जो अन्तिम रील में हीरो विलेन से करता है।



हरिजन बस्तियों में अखाड़े बनने चाहियें ताकि सवर्ण अत्याचार करें तो वे उसकी टांग तोड़ सकें।



इसके लिये हरिजनों को आंदोलन करना होगा। प्रगतिशील विचार वालों को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी।



हरिजनों को जमीन का स्वामी बनाना होगा।



हरिजनों को खुद उठना होगा. उन्हें यह मान लेना चाहिए कि हम किसी से कम नहीं।



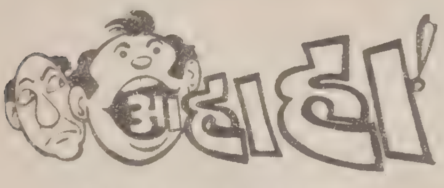
हरिजनों पर सदियों से अत्याचारों का स्ट्रीप टीज कैबरे डांस होता आ रहा है। इस मामले में सेंसर को जागना चाहिए।



मैं जल्दी ही हरिजन अत्याचार पर फिल्म बनाने वाला हूं। उसमें इस समस्या का हल टार्च लेकर ढूढ़ने पर भी नही मिलेगा।



मेरा विचार सिम्पल है यार। हरिजन एट्रोसिटी को बैन कर दो मेरा अनुरोध तो ऊंची जाति इज देट डू नाट दिस थींग इयर। यू नो इट्स वैरी बैड।



एक दिन बादशाह अकबर ने बीरबल से चार प्रश्न किये और कहा, 'इनका उत्तर एक ही दो।'

बादशाह के चार प्रश्न थे—पान क्यों सड़ा, घोड़ा क्यों अड़ा, रोटी क्यों जली और पाठ क्यों भूला ?

बीरबल ने कुछ क्षण सोचा और उत्तर दिया, 'फेरा न गया।'

●

एक दिन की बात है। बादशाह ने बीरबल से पूछा, 'बीरबल, संसार में ऐसी कौन-सी वस्तु है, जिस पर सब की दृष्टि पड़ती है, पर सूरज और चांद जिसे देख नहीं पाते।'

बीरबल ने उत्तर दिया. 'जहांपनाह, अन्धकार।'

●

आम की फसल के दिन थे। एक दिन बादशाह अकबर अपनी बेगम के साथ बैठकर आम खा रहा था। बादशाह आम खा- खा कर उनकी गुठलियां और छिलके अपनी प्यारी बेगमों के आगे जमा करता जा रहा था। अचानक बीरबल भी वहां पहुंच गया। बादशाह उसे देखकर मुस्कराया और बोला, 'देखो बीरबल, यह बेगम कितनी पेटू है। मैं अभी एक आम नहीं खा पाया और इसने इतने आम खा डाले।'

बेगम इस मजाक का उत्तर न दे सकी और लजाकर रह गई। उसने शर्म के साथ बीरबल की ओर देखा।

बीरबल चुप न रहा और उसने बादशाह को फौरन ही उत्तर दे डाला, 'जहांपनाह, कुसूर माफ हो। बेगम साहिबा अधिक आम खा कर छिलके गुठलियां तो छोड़ देती हैं: पर हुजूर उन्हें भी नहीं छोड़ते।'

यह सुन कर बादशाह का मुंह बन्द हो गया और बेगम खुश हो उठी।

●

एक बार बादशाह अकबर और बीरबल साथ-साथ कहीं जा रहे थे। बीरबल की दृष्टि पृथ्वी पर थी। अकबर ने बीरबल से पूछा, 'बीरबल, तुम धरती पर ऐसे ध्यान से क्या देख रहे हो ?'

'सरकार, मेरा पिता धरती में खो गया है।' बीरबल ने गम्भीरता से उत्तर दिया।

'अगर मैं उसे खोज दूं तो ?' बादशाह ने पूछा।

'तो आधा मेरा आधा आपका।'

बादशाह हंसकर रह गया।

●

एक दिन बादशाह अकबर ने बीरबल से पूछा, 'बीरबल, रमजान खुश जाता है या नाखुश ?'

बीरबल ने जवाब दिया, 'खुश।'

इस पर बादशाह बोला, 'क्यों ?'

'जो खुश न जाता होता तो प्रतिवर्ष बिना बुलाये क्यों आता ?'

इस उत्तर से अकबर के होठों पर मुस्कान खेल गई।

●

मदहोश



परिणाम

चिल्ली, मोरार जी प्रतियोगिता का परिणाम
विजेता :- सतबीर सिंह (लुधियाना)
कान में बात:
यहां पर रुकना मना है आगे बढ़ें।

प्रतियोगिता शेर–कविता लिखिये

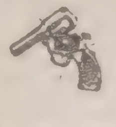
आपको पता ही होगा कि शीघ्र ही देश भर में पूर्ण नशाबन्दी लागू होने वाली है। कवि और शायर शराब के दीवाने होते हैं। कई कवितायें और शेर-गजलें शराब की ही प्रशंसा में लिखी गयी हैं। नशाबन्दी लागू होने पर इन शायरों-कवियों पर क्या बीतेगी उसे आप चार लायनों के शेर या कविता में लिख हमें भेज सकते हैं, सर्वश्रेष्ठ रचना को ५ रु० पुरस्कार। अन्तिम तिथि २४ जून १९७८

अधूरा चित्र प्रतियोगिता का परिणाम

विजेता :—
कुलदीप कुमार शर्मा
गाजियाबाद (यू० पी०)



इन्टरनैशनल ५० शॉट ऑटोमैटिक
पिस्तौल
(लाइसेंस की आवश्यकता नहीं)



आधुनिक तकनीकी व मजबूत धातु से बना। आपको जंगली जानवरों व चोरों से बचायेगा। जोरदार धमाके के साथ आग के शोले उगलता है। मूल्य ५५.७५ रुपये। लैदर केस व बेल्ट सहित। २५० शॉट मुफ्त। अतिरिक्त शॉट ३ रुपया प्रति सौ। डाक खर्च अलग। तुरन्त डिलीवरी के लिए आर्डर के साथ ५ रुपया पेशगी भेजिये।

गन मार्शल इण्डिया
१६, विश्राम बाजार, मथुरा (उ० प्र०)

मातृत्व जाग उठा

सुशीला जैन



आज विनोद का सारा घर शहनाइयों की ध्वनि से गूंज रहा था। उसके घर में उसकी नववधू, उसकी दूसरी पत्नी जो प्रवेश कर रही थी। उधर घर के एक कोने में बैठा स्तब्ध सा पप्पू अपनी विमाता को देख रहा था। जब वह पांच वर्ष का था, उसकी माता उसे छोड़ कर परलोक सिधार गई थी। आज वह आठवें वर्ष में पदार्पण कर चुका था। उसके मन में रह-रह कर न जाने कैसे भाव जागृत हो रहे थे। कभी उसके नेत्रों में प्रसन्नता की चमक आती और दूसरे ही क्षण वे जल से भर जाते।

घर में से जब सभी सम्बन्धी तथा पड़ोसी चले गये तब विनोद पप्पू के पास गया, उसे अंक में भर लिया और चूमा। फिर अपनी नववधू की ओर दृष्टि घुमा कर कहा—'देखो आशी ! ये है हमारा बेटा पप्पू ! कितना प्यारा है' लता की यह मेरे पास आखिरी निशानी है, इतना कहते-कहते विनोद के नेत्रों में जल भर आया और आशा के कंधों पर हाथ रख कर वह बोला—

'आशी ! यह फूल मेरे जीवन की अमानत है। इसे संभाल कर रखना। अपनी माँ की मृत्युरूपी तुषारापात से कुम्हलाए इस पुष्प को तुम ही उदय होते सूर्य की कोमल उष्ण किरण बन कर नवजीवन प्रदान कर सकती हो। इसके जीवन पर छायी उदासी को तुम ही अपने प्यार और दुलार से खुशियों में बदल सकती हो।'

भावावेश में विनोद न जाने क्या-क्या कहता जा रहा था। पर आशा को इन बातों में से एक भी अच्छी न लगी। तिरस्कार की दृष्टि से वह पप्पू की ओर देख रही थी। विनोद के इस अप्रत्याशित वार्तालाप से वह विचलित हो उठी थी। प्यार और उमंग के मीठे-मीठे सपनों के घरौंदे जिनकी कल्पनामात्र से वह उन्मादित हो उठती थी, वे मानों उसे ढहते नजर आने लगे थे। आशा विनोद का सम्पूर्ण प्यार पाना चाहती थी, उस पर एकाधिकार चाहती थी। उस प्यार के अधिकांश को पप्पू से इस प्रकार बांटा जाना उसे असह्य हो रहा था।

उधर पप्पू कातर दृष्टि से आशा की ओर देखता सोच रहा था, शायद नई मम्मी अभी उसे गोदी में उठा लेगी, उसे चूमेगी, उसकी बलायें लेगी। परन्तु ऐसा कुछ भी न हुआ। आशा के चेहरे पर बदलते रंगों व भावों से घबरा कर, पप्पू विनोद की गोदी से उतर कर बाहर की ओर भाग गया, घर के किसी कोने में। विनोद न हिला न डुला। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे, क्या न करे ? वह स्तब्ध सा खड़ा रह गया।

दिन बीतने लगे। और एक दिन जब खोया-खोया सा पप्पू घर के बाहर आंगन में निकला तो उसका छोटा साथी मन्नू भी उसके पास आ गया। दोनों बाहर लॉन में घास पर बैठ गये, पर पप्पू आज कुछ ज्यादा ही दुःखी प्रतीत हो रहा था। मन्नू उससे पूछने लगा—

'पप्पू तेरी तो नई मम्मी आ गई है। यार तेरे तो अब खूब मजे हो गये होंगे। तभी तो तू अब बाहर खेलने भी नहीं आता।'

पप्पू की आँखों में आँसू उमड़े पड़ रहे थे। वह बोला—'हाँ यार, अब खाने को ज्यादा मिलने लगा है।'

'सच ! अरे क्या मिलने लगा है अब ! मुझे भी देगा या खुद ही खा लेगा' खुशी से चहकता हुआ मन्नू बोला।

'मन्नू वो तेरे मतलब की नहीं है। तुझे वह नहीं पचेगा।'

मन्नू आश्चर्य से बोला—'ऐसी क्या चीज है दोस्त ?'

'थप्पड़, मार और डांट···' यह कहकर पप्पू घर के अन्दर की ओर भाग आया।

घर के अन्दर जाकर पप्पू से कुछ पूछ लेने की हिम्मत मन्नू की न हुई। कुछ देर प्रतीक्षा करके निराश होकर वह अपने घर लौट गया।

दिन बीतते रहे। पप्पू स्कूल में पढ़ने जाता था। पर सभी जगह उदास-उदास। घर आने पर आशा उसे घर से बाहर न निकलने देती। विवाह से पहले विनोद उसे सदा स्वयं स्कूल छोड़ने जाता था। परन्तु अब पप्पू को अकेले ही स्कूल जाना पड़ता था। विनोद के घर के निकट ही दूसरे घर में एक बूढ़ा व्यक्ति रहता था। वह उसके घर की सभी परिस्थितियों को समझता था कि विनोद भी विवश है और पप्पू भी। पप्पू उसे 'बाबा' कह कर पुकारता था। बाबा स्कूल जाते पप्पू को नित्य ही समझाते कि वह प्रसन्न रहा करे। पढ़ाई की ओर उसका ध्यान आकृष्ट करने का वह प्रयत्न करता रहता।

आशा सदैव यही कामना करती कि पप्पू जैसा फूल सा बच्चा उसकी गोद में भी आ जाए। आज दो वर्ष हो गये थे, न जाने विधाता को क्या स्वीकार था। उसकी यह कामना पूर्ण न हुई। न जाने आशा को क्यों पप्पू से और भी ईर्ष्या होती जा रही थी। विनोद उसे कई बार समझाने का प्रयत्न करता कि वह पप्पू को अपना ही पुत्र समझे। क्या विनोद का बेटा उसका बेटा नहीं है।

पप्पू दस वर्ष का हो चुका है। दस-वर्षीय मन्नू, उसका मित्र और सहपाठी आज उसके पास प्रतिदिन की भांति आया। आते ही मन्नू ने पूछा—

शेष पृष्ठ ४० पर



वह रहा, वह रहा। लगता है कि मेरा काम बन गया। पहले चल कर पूछ कर पक्का पता करता हूं
क्यों भाई तुम कौन से जानवर हो?
मैं यूडीप्टस क्रेसटेटस हूं। तुम्हें किससे मिलना है?
बाप रे! यह तो कुछ और ही है!
बात यह है भैया मैं पेंग्विन की तलाश में हूं। मैं आजकल एक पोलर बियर साहब के पास बावर्ची का काम कर रहा हूं. सुबह साहब मेरे से बोला…
मिस्टर लोमड़ा, आज हम फिश कटलेट का ब्रेकफास्ट नाई मंगटा! आज अम पेंग्विन का कलेजी और किडनी फ्राइ का मूड मे हाय। जल्दी इन्तजाम करना मंगटा।
यस सर
पंचतंत्र
जल्दी मुझे कहीं पेंग्विन पकड़ कर चाक करना है। ब्रेक फास्ट में देरी हो गयी तो साहब मुझे ही फ्राई करके खा जायेगा। बड़ा गुस्से वाला है हमारा साब! मेरी चमड़ी उतार देगा।
हा, हा, हा, हा! अच्छा बेवकूफ बनाया उसे! मैं असल में पेंग्विन की ही जाति का हूं। मैंने अपना नाम सीधा बताने की बजाय लेटिन का टेक्नीकल नाम बताया। बायलॉजी में की डाक्टरेट आज खूब काम आई। आई एम डाक्टर इन बायलॉजी।
शिक्षा—डाक्टर और मेकेनिक टेक्नीकल नामों की आड़ में लोगों को मूर्ख बनाते हैं और उनकी चमड़ी उतारते हैं।


सवाल
यह है ?
कि इनका भी जवाब नहीं !
जनता पार्टी के बड़े बड़े नेता
कहते हैं कि पार्टी नहीं टूटेगी
चाहे हम टूट जाऐं !!!

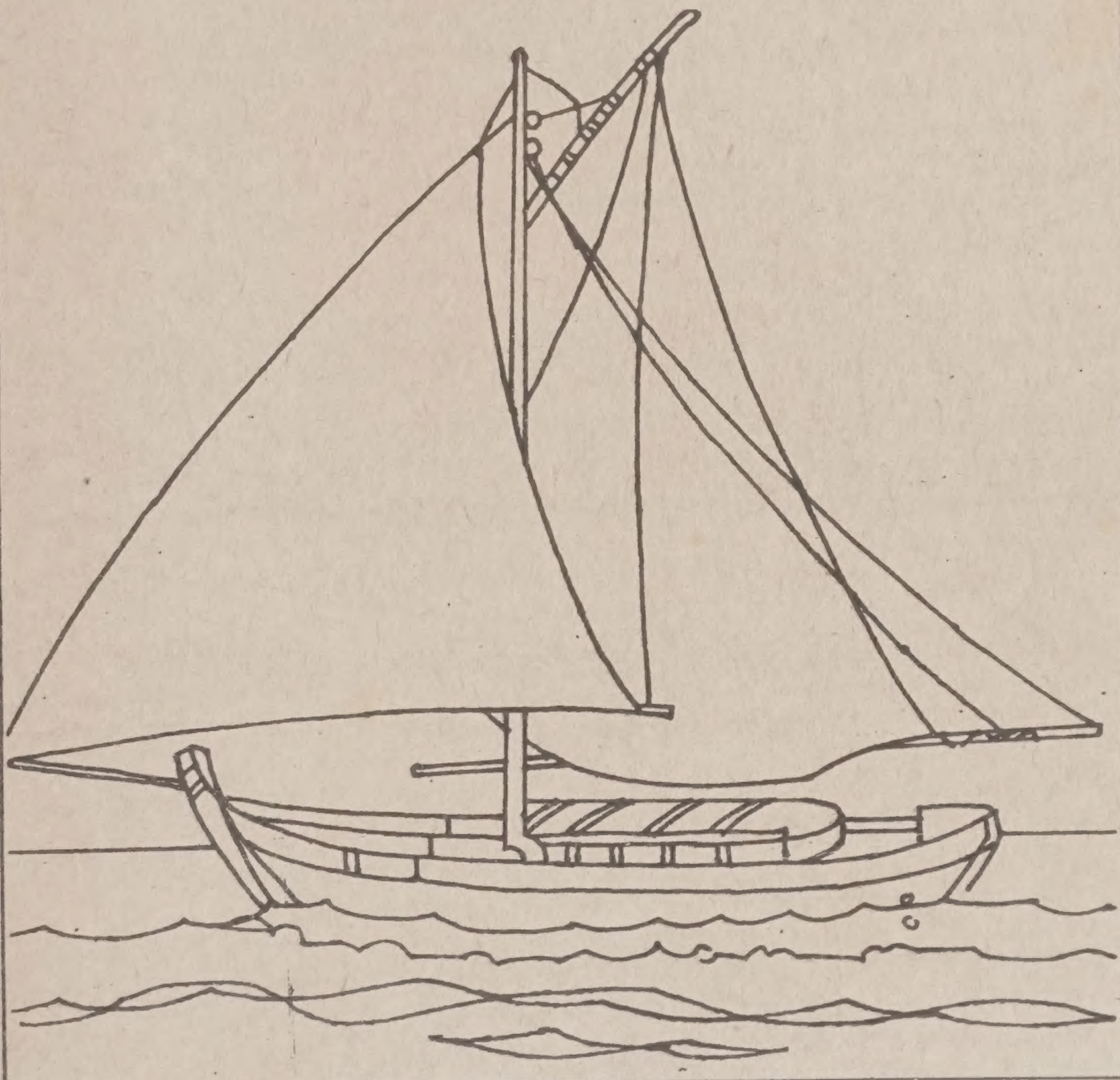
दीवाना-कैमल

रंग प्रतियोगिता

निःशुल्क प्रवेश

पुरस्कार जीतिए:

कैमल-पहला इनाम ३० रु.
कैमल-दूसरा इनाम २० रु.
कैमल-तीसरा इनाम १० रु.
कैमल-आश्वासन इनाम ५
दीवाना-आश्वासन इनाम ५
कैमल-सर्टिफिकेट १०



केवल १२ वर्ष तक के विद्यार्थी प्रतियोगितामें शामील हो सकते हैं। उपर दिये गये चित्रमें अपने मनचाहे कैमल रंग भर दिजिए। अपने रंगीन प्रवेश-पत्र नीचे दिये गए पत्ते पर भेजिए, दीवाना, ८-बी, बहादूर शहा जाफर मार्ग, नयी दिल्ली ११०००२
परिणाम का निर्णय अन्तिम निर्णय होगा। और कोई भी पत्रव्यवहार, नहीं किया जाएगा।

नाम .... उम्र ....

पता ....

कृपया ध्यान रखिए कि पूरा चित्र पेंट किया जाये।

चित्र भेजने की अंतिम तारीख: ८-७-७६

CONTEST NO 3

VISION

पृष्ठ १३ से आगे

कुसुम कली विस्मय से मुन्नेलाल बाजरिया की ओर देखे जा रही थी। बाजरिया ने गद्-गद् होकर प्रश्न किया—'आपके यहाँ से वैवाहिक विज्ञापन किस कन्या के लिए प्रकाशित करवाया गया है ?'

'आपने किसके लिए वधू की तलाश में पधारने का कष्ट किया है ? विज्ञापन मैंने अपने लिए दिया था।'

'मैं भी अपने लिए ही आपके दर्शन हेतु आया हूं।'

'आपने पत्र में तो अपनी आयु तीस वर्ष लिखी थी। लेकिन आप तो···?'

'हाँ, मेरी आयु चालीस से एक दो वर्ष ऊपर है। लेकिन आपने भी तो विज्ञापन में २५ वर्ष ही लिखी थी ?'

कुसुम कली बाजरिया जी की ओर देख रही थीं और बाजरिया कुसुम कली की ओर।

'छोड़िए भी, आप उम्र की बात ले बैठीं ! यह तो एक संयोग था कि दोनों को ही अपनी उम्र के साथ मजाक करना था। पहले मैं अपनी स्थिति आपके समक्ष स्पष्ट कर दं। इसी नजर में 'मॉडर्न मैटल्स एण्ड मितरल्स' फैक्ट्री मेरी निजी सम्पत्ति है। उसी में दिन रात खपता रहता हूं। पत्नी चार वर्ष पहले स्वर्ग सिधार गई। एक बारह वर्षीय पुत्र, छह वर्षीय पुत्री पिंकी है। चार वर्ष से शादी वादी का कोई विचार भी मन में न आया था। अब सोचता हूं, घर को संभालने वाला कोई प्राणी हो तो बच्ची को मां की खोयी ममता भी मिल जाए और अपने जीवन का एकाकी पन भी हल्का हो जाए। इससे अधिक कुछ भी कहना मैं नहीं चाहता। अपने निर्णय की सूचना जब भी चाहें आप भेज सकती हैं। बाजरिया जी ने घड़ी की ओर देखते हुए कहा—'अब चलता हूं। नमस्कार !'

कुसुम कली के चेहरे पर अनेक रंग चढ़ते उतरते स्पष्ट होने लगे थे। जैसे ही बाजरिया जी उठने को हुए कुसुम कली ने कहा—'क्या चाय भी पीकर नहीं जायेंगे ?'

बाजरिया जी मुस्कराये और अपने भारी भरकम शरीर को आराम से फैलाकर बैठ गए। कुसुम कली ने गंगा को नाश्ता लगाने को कहा। कुछ ही मिनट बाद टेबल पर अनेक प्लेटें सज चुकी थीं। चार पाँच तरह की मिठाइयां, नमकीन, कटे हुए सेब के टुकड़े और बिस्कुट का बाजार सा देख कर बाजरियाजी मुस्कराये—'इतने सब की व्यवस्था आपने किसके लिए की है ?'

'आपके आकार के अनुसार तो यह कुछ भी नहीं है।'

'यही बात स्वयं के लिए भी तो कह सकती हैं ?' बाजरिया जी ने सीधे बैठते हुए कहा। कुसुम कली झेंपकर रह गयी। फिर दोनों एक साथ नाश्ते की प्लेटों पर इस तरह पिल पड़े कि कुछ ही मिनट में प्लेटें खाली होकर चमकने लगीं।

बाजरिया जी जाने लगे तब अभिवादन के उत्तर में कुसुम कली इतना ही कह सकी—'कभी अपनी पिंकी से मिलवाइये न ?'

'क्यों नहीं ! कभी क्या, आप जब चाहें वह आपसे मिलने आ जायेगी।' बाजरिया जी चले गये। कुसुम कली ने खिड़की का पर्दा हटाकर देखा, बाजरिया की बादामी कार अहाते से निकालकर सड़क पर दौड़ने लगी थी। वह खड़ी सोच रही थी, बाजरिया जी इंटरव्यू देने आये थे। लेकिन कुछ लेकर चले गये ? इसी का अनुमान वह खिड़की की ओट में खड़ी लगा रही थी। ●

पृष्ठ [illegible] से आगे

'पप्पू क्यों उदास हो ? अरे, चल अपना पाठ याद कर लें। कल मास्टर जी सुनेंगे नहीं क्या ?'

और दिनों की भांति पप्पू न उठा, वह रो पड़ा।

'मन्नू, आज मुझे अपनी मम्मी की याद आ रही है। रात को आज मेरी मम्मी मुझे मिली थी, न जाने वह सपना था या सत्य !'

मन्नू खुशी से चीख पड़ा—'सच पप्पू ! क्या कह रही थी तुम्हारी मम्मी ?'

पप्पू के नेत्रों से आंसू गिरते जा रहे थे—

'लेकिन मन्नू जो कुछ मम्मी ने रात को कहा वह कुछ भी तो सच नहीं।'

लेकिन क्या कहा था पप्पू, कुछ बता तो सही ? ये मोती ढुलकाने से क्या होगा।'

पप्पू उसी स्वर में बोला—'मन्नू मम्मी···मम्मी तो कह रही थी कि नई मम्मी बहुत अच्छी है। तू इसे यही समझा कर कि वह मैं ही हूं। वह तो मुझे बहुत प्यार करती है।' एकाएक वह रुक गया।

मन्नू बोला—'और क्या कहा था [illegible] ?

[illegible]छ याद करता हुआ सा पप्पू बोला—

'और···और मम्मी ने यही कहा था कि माँ के हृदय, को कौन जान सकता है। वह तो ममता की पुतली है।'

इसी तरह न जाने कब तक वे बातें करते रहे और फिर मन्नू अपने घर चला गया। मन्नू के जाते ही पप्पू वहीं बैठा-बैठा रो पड़ा।

आज आशा ने छुप कर उन दोनों की सब बातें सुन ली थीं। पप्पू की बातें वह सुनती जा रही थी और गंगा-यमुना मानों उसके नेत्रों से उमड़ी पड़ रही थीं। आज उसका मातृत्व जाग उठा था।

'हाँ-हाँ, वह पप्पू की माँ ही तो है। यदि वह विनोद का बेटा है तो उससे पहले आशा का। पप्पू जब फिर से रो पड़ा तो आशा अपने को रोक न सकी। वह भागकर पप्पू के पास गई और उसे अपनी गोद में उठा लिया। उसका गला भर आया था, चाहने पर भी मुख से शब्द नहीं निकल रहे थे। पप्पू के नेत्रों से जो अश्रु टपक रहे थे वे पलकों में ही अटके रह गये और आश्चर्य से वह आशा की ओर देखने लगा—

'क्या वह स्वप्न देख रहा था।

आशा ने आगे बढ़ कर उसे हृदय से लगा लिया। विह्वल होकर वह बोली—'मेरे राजे बेटे, एक बार मुझे मम्मी तो कह, कह मेरे राजे बेटे, कह !

पप्पू को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि यह क्या हो रहा है। अपलक पलकों पर अटके मोतियों को सहारे वह चकित भाव से बोला—

'लेकिन तुम तो कह रही थीं कि तुम मेरी मम्मी नहीं हो। नहीं-नहीं तुम मेरी मम्मी नहीं हो। मेरी मम्मी तो भगवान जी के पास हैं।'

पलकें मोतियों को सहारने से असमर्थ हो गईं और वह सिसक पड़ा। आशा के आंसू भी थम नहीं रहे थे—'नहीं बेटे मैं ही तो तेरी मम्मी हूं। तू ऐसे क्यों देख रहा है ? मुझे क्या तू पहचानता नहीं।'

न जाने आशा की आँखों में आज क्या था, पप्पू के होंठों पर शब्द आये पर वह बोल न सका, उसके मुख से अश्रुमिश्रित प्रसन्नता की एक चीख निकली—'मम्मी' और आशा के वक्ष में उसने अपना मुँह छिपा लिया। आशा भी उसे वक्ष में छुपाए मातृत्व के उस अनमोल सुख को कब तक लूटती रही जिससे आज तक वह वंचित थी। ●



ी.ए.) /२०४ , १७ पुकर

हरिओम अरोरा द्वारा श्री देसराज अरोरा, एम-४, पटेल मार्ग, ग़ाजियाबाद, १७ वर्ष, बहान बनाना, हाकी के खेल में रुचि रखना।

अरुण कुमार गुप्ता द्वारा श्री सुरेश गुप्ता, मेन रोड, तपकरा, जिला रायगढ (म.प्र.), १८ वर्ष, मच्छरों के पेट में चाकू भोंकना।

शम्भू गोयनका, शर्मा लेन, बंका बाजार, कटक-७५३, १६ वर्ष, हवाई जहाज की यात्रा करना, दूसरों के साथ भलाई करना।

प्रदीप कुमार भण्डारी 'टोनी' २३४-एल. माडल टाउन, पानीपत (हरियाणा), १६ वर्ष, क्रिकेट खेलना, सबसे मित्रता करना।

कन्हैया जगमलिया, बिस रेडियो श्रोता संघ जरामाटा सिन्धी कालोनी, बिलासपुर, २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना, नावल पढ़ना।

संजय कुमार शर्मा द्वारा डी. एल. शर्मा अतिरिक्त तहसीलदार करसिया (म. प्र.), १६ वर्ष, गधों की फोटो खींचना, पढ़ना।



डोगर, गाव, यात्रा टेबल

विजय कुमार साह, २५ कुंवर मंडली, खजूरी बाजार, इन्दौर (म. प्र.), १८ वर्ष, छोटे-बड़ों से प्यार करना, फिल्म देखना।

अशोक कुमार सैनी, ४४३७, आर्यपुरा दिल्ली, १६ वर्ष, कल्पना लोक में घूमना, पढ़ कर हसना, बाजार में घूमना, आराम करना।

अजय सिंघल, डी.-२५ सी. सी. कालोनी, १० वर्ष, स्केटिंग करना, टिकटें इकट्ठी करना, लड़ाई की पिक्चर खूब देखना।

रविन्द्र कुमार गुप्ता, गुप्ता वस्त्र भण्डार, डेरा नं. २ लाल तालाब, बुलन्दशहर, २० वर्ष, खूब कमाना, अच्छी फिल्में देखना।

अनिल पारख, ६३८ मालीबाड़ा, नई सड़क, दिल्ली-६, २० वर्ष, क्रिकेट खेलना, दोस्ती करना, बड़ों का आदर करना।

स्नेह कुमार जैन सुपुत्र श्री टेकचन्द जैन, मोहल्ला रामपुरा, हांसी, जिला हिसार, १७ वर्ष, क्रिकेट खेलना, दोस्ती करना।



१३ ाइन, पढ़ना, लाना,

शाकिर मोहम्मद कुरेशी, ५ मोहसीनपुरा देवास, (म. प्र.), १७ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, टेबल टेनिस खेलना, दोस्ती करना।

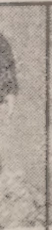
अब्दुल गफूर 'मुल्तानी', ५५ मौलाना आजाद मार्ग, इन्दौर, १८ वर्ष, पढ़ना, ऊंची छलांग लगाना, दौड़ना और टहलना।

राम बाबू दुसाद, ६६८, गोविन्द निवास, इमली की गली, जार के कुएं का रास्ता, जयपुर, १८ वर्ष, पढ़ाई करना, तैरना।

जयन्त कुमार शर्मा द्वारा रामेश्वर प्रसाद शर्मा सहायक (कन्डक्ट) कुरुक्षेत्र विश्व विद्यालय, कुरुक्षेत्र, १८ वर्ष, खेलना, मित्रता करना।

आनन्द खम्पा, नैनीताल मल्लीताल, २० वर्ष, शायरी करना, पढ़ना, दूसरों की मदद करना, गरीबों को दान देना, मुसीबत में काम आना।

सुनील कुमार (दीपक) १५-ए. शापिंग सेन्टर कोटा (राजस्थान), १८ वर्ष, मुकेश के गीत सुनना व गाने गाना।



बैरन ायपुर पत्र- शहरों

दिलीप कुमार केशवानी, एच. सी. दत्ता रोड, मुकम * १६ वर्ष, फिल्म देखना, का में पढ़ना, टी. वी. पर फिल्म देखना।

महेश कुमार तलरेजा, लल्लू ाकर, मुंगेर, १८ वर्ष, सेहत बनाना, पेन्टिंग करना, फिल्म देखना, सुबह-शाम व्यायाम करना।

सनार खान, ३१, मेन रोड, रांची (बिहार), १४ वर्ष, मोटर साईकिल चलाना, अपने यहां दादागीरी का पाठ अदा करना।

शंकरराव बाकर, तिलक रोड, रामनगर, अकोला, २१ वर्ष, लड़कों से दोस्ती करना, हेमा मालिनी की पिक्चर देखना।

जयप्रकाश लाल दास, मकान नं. २८, बैंक कालोनी, पिस्का मोड़, रातु रोड, रांची-५, १६ वर्ष, पत्रिकाएं पढ़ना, मित्रता करना।

गुलामनवी (अन्सारी) आधुनिक सार्वजनिक पुस्तकालय अकबरपुर, फैजाबाद (यू.पी.). १८ वर्ष, पुस्तकालय खोलना, फुटबाल खेलना।



बसंत बल्लभ जोशी, जी. टी. आई., मकान नं. सी. १७/६, पेपर मिल कालोनी, १६ वर्ष, शतरंज खेलना, फुटबाल खेलना, बहस करना।

अनिल उप्पल, रेलवे स्टेशन अबोहर, १७ वर्ष, पिक्चर देखना, मासिक पत्रिकायें पढ़ना, पेन फ्रेंडशिप करना, शतरंज खेलना।

कुलवन्त सिंह द्वारा एस. करतार सिंह, क्लोथ मर्चेन्ट, सुन्दर नगर, २४ वर्ष, नावल पढ़ना, पत्र-मित्रता करना, चुटकुले बनाना।

घनश्याम रूपानी, १२२/३३८ सिन्धी कालोनी कानपुर-५, २२ वर्ष, चिपकियां इकट्ठा करना, पत्र-मित्रता करना, सेहत बनाना।

हमारा पता : दीवाना फ्रेंड्स क्लब
८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ____________

पता ____________

आयु ________ शौक ________

ा फ्रेंड्स क्लब

दीवाना फ्रेंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। (फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।)

ा तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

८ जून से १४ जून ७८ तक



मेष : ८ जून दोपहर से ६ जून की रात्रि तक के समय में आप किसी न किसी कारण-वश परेशान रहेंगे, घर-परिवार की एवं व्यापारिक समस्याएं भी बनी रहेंगी, बने काम में बिगाड़ होगा ।



वृष : ६ जून की रात्रि से ११ जून तक का समय नेष्ट रहेगा, बने कामों में बिगाड़ या कोई महत्वपूर्ण काम बनते-बनते रह जावेगा, व्यर्थ के झंझटों से परेशानी बढ़ेगी । अन्य दिनों में वातावरण अनुकूल रहेगा ।



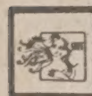
मिथुन : संघर्षपूर्ण होने के साथ-साथ यह सप्ताह दिलचस्प भी कहा जा सकता है, कुछेक योजनाएं सफल रहेंगी, कारोबार की व्यवस्था में भी सुधार होगा, कभी-कभी आलस्य या थकावट का प्रभाव पड़ेगा ।



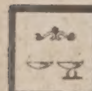
कर्क : ८ जून दोपहर तक परेशानियां काफी रहेंगी, किसी बने काम में बिगाड़, यात्रा न करें, अजनबी लोगों से सावधान रहें, हानि या भय है । अन्य दिनों में आप व्यापार में अच्छा धन प्राप्त करेंगे ।



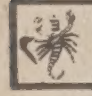
सिंह : ८ जून दोपहर से ६ जून की रात तक यात्रा पर न जाएं, संकट एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा । धन की कमी भी पैदा हो सकती है । अन्य दिनों में आपको संघर्ष काफी करना पड़ेगा ।



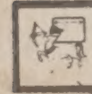
कन्या : घरेलू हालात ठीक चलेंगे और व्यापारिक स्थिति में भी सुधार होता महसूस होगा, कुछ अधूरे काम पूरे होंगे, रुका हुआ धन मिलने लगेगा, आर्थिक स्थिति अनुकूल ही रहेगी ।



तुला : यह सप्ताह दिलचस्प होने के साथ-साथ संघर्षपूर्ण भी रहेगा, विरोधी सामना न कर सकेंगे, किसी प्रियजन के मिलाप से साहस बढ़ेगा, आय उत्तम होगी, परिवार से सुख मिलेगा ।



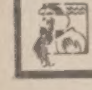
वृश्चिक : व्यर्थ की समस्याएं बनती रहेंगी, झगड़े आदि से परेशानी, यात्रा न करें परन्तु ६ जून दोपहर के बाद हालात ठीक चलेंगे, यात्रा भी सफल रहेगी, व्यापार में सुधार, लाभ बढ़ेगा ।



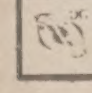
धनु : ८ जून दोपहर से ६ जून रात्रि तक परेशानियां बनी रहेंगी, गुस्सा बिना कारण ही बढ़ेगा, स्वास्थ्य में भी बिगाड़, काम बनते-बनते रह जावेंगे, परन्तु अन्य दिनों में व्यापार ठीक चलेगा ।



मकर : इन दिनों परिश्रम काफी करना पड़ेगा, दौड़-धूप करने पर कामों में सफलता मिलती रहेगी, नातेदारों से मेल जोल, यात्रा में सुख, आर्थिक स्थिति में सुधार होगा व्यय बढ़ेगा ।



कुम्भ : इस सप्ताह के दौरान हालात अनुकूल चलेंगे, कारोबारी कामों में सफलता मिलेगी और लाभ भी आशा से अधिक होता रहेगा, नई वस्तुओं की खरीद पर व्यय काफी करना पड़ेगा ।



मीन : सप्ताह अच्छा रहेगा, कुछ महत्वपूर्ण काम बनते दिखाई देंगे, कोई विशेष समाचार मिलेगा, यात्रा भी सफल रहेगी, परन्तु ८ जून दोपहर तक यात्रा न करें, घरेलू वाद-विवाद से चिन्ता रहेगी ।



'मैं अपनी इमेज बदलना चाहती हूं !'

रेहाना सुल्तान

● विजय भारद्वाज

रेहाना सुल्तान को ग्लैमर गर्ल कहा जाता है । हालांकि वह फिल्मोद्योग में यह सोचकर नहीं आई थी कि उन्हें इसी प्रकार के ग्लैमर्स रोल करने पड़ेंगे । लेकिन बम्बइया फिल्मों ने रेहाना की इमेज वही बनाई, जिसमें वह एक बार चर्चित हो गई । यह रेहाना की बदकिस्मती ही समझो कि वह अब तक इस ग्लैमर के भंवर से नहीं निकल पाई हैं । हालांकि अपनी इमेज बदलने के लिए रेहाना सुल्तान अभी भी प्रयत्नशील हैं ।

रेहाना का जन्म १६ नवम्बर को इलाहाबाद में हुआ । इन्होंने इण्टर तक शिक्षा प्राप्त की और फिल्म एण्ड टेलीविजन इन्स्टीच्यूट की यह स्नातिका हैं । इनकी पहली फिल्म थी 'पुजारिन' । लेकिन यह फिल्म आई और चली गई । फिल्म 'चेतना' से रेहाना सुल्तान ग्लैमर गर्ल के रूप में प्रसिद्ध हो गई । युवा पीढ़ी के दर्शकों ने रेहाना सुल्तान को पसन्द किया और अपनी मनपसन्द अभिनेत्री मान लिया ।

लेकिन अफसोस ! यही 'इमेज' रेहाना सुल्तान की पमनिन्ट बन गई । हर निर्माता निर्देशक रेहाना में वही ग्लैमर टटोलने लगा, जो 'चेतना' में थी । लिहाजा 'दस्तक' में भी रेहाना उसी इमेज में पर्दे पर पेश आई । 'हारजीत', 'सज्जारानी' आदि सभी फिल्मों में रेहाना ने लगभग एक सा ही रोल निभाया । फिल्म 'दस्तक' के लिये उन्हें सर्व श्रेष्ठ भूमिका का पुरस्कार भी दिया गया । इन्होंने बंगला फिल्मों में भी अभिनय किया है ।

इनकी आने वाली प्रमुख फिल्में इस प्रकार हैं : 'सिस्टर', 'यात्रा', 'ऊपर वाला जाने', 'इंशा अल्लाह', 'प्रतिशोध', 'कुरान और ईमान' आदि ।

एक मुलाकात में रेहाना से जब वार्तालाप हुई तो हमने पूछा, 'क्या आप अपनी 'इमेज' बदल रही हैं या ग्लैमर्स भूमिकाएं ही साइन कर रही हैं ।'

'अब मैंने स्वयं निर्माता-निर्देशकों से कान्टेक्ट करना शुरू कर दिया है, न कि पी० आर० ओ० के द्वारा ! अब मैं हर तरह के रोल प्राप्त कर रही हूं और मुझे उम्मीद है कि शीघ्र ही अपनी इमेज बदल दूंगी ।'

'आपकी कोई खास इच्छा है ?'

'हां ! मैं विद्या सिन्हा जैसे रोल पाना चाहती हूं और उसी रूप में प्रसिद्धी प्राप्त करना चाहती हूं । देखो मेरी यह इच्छा कब पूरी हो', रेहाना मुस्कराते हुई बोली ।

'भगवान जल्दी ही आपकी इच्छा पूरी करे, हमारी दुआ है ।'

'आपके मुँह में घी शक्कर । दीवाना दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करे । मेरी यह कामना है ।' रेहाना ने जाते-जाते कहा ।

परछाइयां, टनर्ट टायल लेन
जुहू चर्च रोड, जुहू बम्बई-४०००५४